अध्याय 1

भाग-1

राजा, किसान और नगर—आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ

(लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना की—
   (a) 320 ई.पू. (b) 321 ई.पू. (c) 322 ई.पू. (d) 323 ई. पू.।
2. सिक्कों का अध्ययन कहलाता है—
   (a) मुद्राशास्त्र (b) मुद्रण (c) मुद्राराक्षस (d) मुद्रित तथ्य।
3. मगध जनपद स्थित था—
   (a) आधुनिक उत्तर प्रदेश में (b) आधुनिक आंध्रप्रदेश में
   (c) आधुनिक बिहार में (d) आधुनिक मध्यप्रदेश में।
4. प्रभावती गुप्त पुत्री थी—
   (a) चंद्रगुप्त द्वितीय की (b) चंद्रगुप्त प्रथम की (c) चंद्रगुप्त मौर्य की (d) समुद्रगुप्त की।
5. मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी—
   (a) पाटलिपुत्र (b) सुवर्णगिरी (c) तक्षशिला (d) उज्जयिनी।
6. जेम्स प्रिंसेप ने अशोककालीन ब्राह्मी लिपि का अर्थ निकाला—
   (a) 1838 ई. (b) 1848 ई. (c) 1858 ई. (d) 1828 ई.।
7. प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख) के लेखक थे—
   (a) कालीदास (b) हरिषेण (c) मेगस्थनीज (d) कौटिल्य।

उत्तर— 1. (b), 2. (a), 3. (c), 4. (a), 5. (a), 6. (a), 7. (b).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. मौर्यकाल में कर वसूली और संग्रह करने वाले अधिकारी को ..... कहा जाता था।
2. कौटिल्य ने राजनीतिशास्त्र पर आधारित ..... नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा।
3. ..... चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था।
4. भारत की दशा का आँखों देखा-हाल मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक ..... में लिखा।
5. मौर्य काल में ..... कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
6. अशोक के सिंह शीर्ष को ..... सरकार ने ..... चिन्ह के रूप में अपनाया।

उत्तर—1. सन्निधाता, 2. अर्थशास्त्र, 3. मेगस्थनीज, 4. इंडिका, 5. समहर्ता, 6. भारत, राज्य।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. प्रयाग प्रशस्ति	(a) अशोक
2. हर्षचरित	(b) हरिषेण
3. पियदस्सी	(c) चंद्रगुप्त मौर्य
4. अर्थशास्त्र	(d) कुषाण
5. इंडिका	(e) कौटिल्य
6. देवपुत्र	(f) मेगस्थनीज
7. मौर्य वंश	(g) बाणभट्ट।

उत्तर—1. (b), 2. (g), 3. (a), 4. (e), 5. (f), 6. (d), 7. (c).

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों का अध्ययन किया।
2. छठी शताब्दी में भारत 18 महाजनपदों में बँटा हुआ था।
3. चंद्रगुप्त मौर्य ने 321 ई. पू. में मौर्य वंश की स्थापना की।
4. प्रयाग प्रशस्ति की रचना बाणभट्ट ने की थी।
5. मेगस्थनीज मौर्य शासक अशोक के शासनकाल में भारत आया।
6. अशोक के पश्चिमोत्तर से मिले अभिलेख अरामेइक और यूनानी भाषा में हैं।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. असत्य, 6. सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वंश की स्थापना किस सन् में की थी ?
2. सिक्कों का अध्ययन क्या कहलाता है ?
3. मौर्य साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी ?
4. प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख) के लेखक कौन थे ?
5. मौर्यकाल में कर वसूली और संग्रह करने वाले अधिकारी को क्या कहा जाता था ?
6. कौन चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था ?
7. भारत की दशा का आँखों देखा हाल मेगस्थनीज ने अपनी किस पुस्तक में लिखा ?
8. मौर्य वंश का संस्थापक कौन था ?
9. सबसे पहले के अभिलेख किस भाषा में लिखे गए थे ?
10. चंद्रगुप्त मौर्य का गुरु तथा उनका प्रधानमंत्री कौन था ?
11. प्राकृत और पालि भाषा में किस शासक के अभिलेख लिये गये थे ?
12. सर्वाधिक विख्यात कुषाण शासक कौन था ?
13. गुप्त काल में प्रांत को क्या कहा जाता था ?
14. मौर्यकाल में चाँदी के सिक्के को क्या कहा जाता था ?
15. मौर्यकाल में कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता था ?

उत्तर—1. 321 ई.पू., 2. मुद्राशास्त्र, 3. पाटलिपुत्र, 4. हरिषेण, 5. सन्निधाता, 6. मेगस्थनीज, 7. इंडिका, 8. चंद्रगुप्त मौर्य, 9. प्राकृत, 10. कौटिल्य, 11. अशोक, 12. कनिष्क, 13. भुक्ति, 14. पण, 15. समहर्ता।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुद्राशास्त्र से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—मुद्राशास्त्र से अभिप्राय सिक्कों के अध्ययन से है। इसमें सिक्कों पर मिलने वाले चित्रों, सिक्कों की धातु तथा लिपि का अध्ययन शामिल है।

प्रश्न 2. 'अभिलेख' से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—अभिलेख उन लेखों को कहा जाता है जो स्तंभों, ताम्रपत्रों, चट्टानों, पत्थरों तथा गुफाओं की चौड़ी पट्टियों पर खुद तत्कालीन शासकों के शासन का सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक चित्र खींचते हैं।

प्रश्न 3. 'मेगस्थनीज' कौन था ?

उत्तर—मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत था। वह पाँच वर्ष (302 ई.पू. से 298 ई.पू.) तक चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा और भारत की दशा का आँखों देखा हाल अपनी पुस्तक 'इंडिका' में लिखा। यह पुस्तक अब नष्ट हो चुकी है, लेकिन उसके प्राप्य अंशों के आधार पर चंद्रगुप्त के शासनकाल की पर्याप्त जानकारी हमें मिलती है।

प्रश्न 4. जेम्स प्रिंसेप कौन था ? उसने कौन-सी दो प्राचीन लिपियों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की ?

उत्तर—ईस्ट इंडिया के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने सम्राट अशोक के अभिलेखों पर लिखी ब्राह्मी लिपि का अर्थ निकाला तथा ब्राह्मी लिपि को पढ़ने में सहायता की। इस प्रकार मौर्यकालीन इतिहास की एक नई तस्वीर सामने आई। निःसंदेह अभिलेख-विज्ञान की प्रगति में उनका महत्वपूर्ण योगदान था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. चन्द्रगुप्त मौर्य कौन था ? उसका राज्य कहाँ तक फैला था ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश का संस्थापक था। उसने 321 ई.पू. में मौर्य वंश की स्थापना की थी। उसका राज्य पश्चिमोत्तर में अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक फैला हुआ था।

प्रश्न 6. महाजनपद क्या थे ? कुछ महत्वपूर्ण महाजनपदों के नाम बताइए।

उत्तर—छठीं शताब्दी ई.पू. में उत्तरी भारत में कुछ बड़े-बड़े राज्य स्थापित हो गए थे। इन्हें महाजनपद कहा जाता था। इनकी संख्या 16 थी। इनमें महत्वपूर्ण महाजनपदों के नाम निम्नलिखित थे—

(1) कुरु, (2) पांचाल, (3) मगध, (4) अवंति, (5) कोशल, (6) वज्जि, (7) गाँधार आदि।

प्रश्न 7. 'मनुस्मृति' क्या है ? इसमें राजा को क्या सलाह दी गई है ?

उत्तर—मनुस्मृति आधुनिक भारत का सबसे प्रमुख विधिग्रंथ है। यह संस्कृत भाषा में है। जिसकी रचना 200 ई. पू. से 200 ई. के बीच हुई थी। इसमें राजा को सलाह दी गई कि भूमि-विवादों से बचने के लिए सीमाओं का गुप्त पहचान बनाकर रखनी चाहिए। इसके लिए सीमाओं पर भूमि में ऐसी वस्तु दबाकर रखनी चाहिए जो समय के साथ नष्ट हो।

प्रश्न 8. प्रभावती गुप्त कौन थी ? उसके संबंध में कौन-सा उदाहरण मिलता है ?

उत्तर—प्रभावती गुप्त आरंभिक भारत के एक प्रसिद्ध शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.) की पुत्री थी। उनका विवाह दक्कन पठार के वाकाटक परिवार में हुआ था। उन्होंने भूमि दान में दिया था जो किसी महिला द्वारा दान का विरला उदाहरण है।

प्रश्न 9. मौर्यों के राजनैतिक इतिहास के प्रमुख स्रोत क्या-क्या हैं ?

उत्तर—मौर्यों के राजनैतिक इतिहास के प्रमुख स्रोत—(1) मेगस्थनीज की 'इंडिका', (2) जैन और बौद्ध साहित्य, (3) अशोक के शिलालेख, (4) कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र'।

प्रश्न 10. मौर्योत्तर युग में भारत से कौन-कौन सी वस्तुओं का निर्यात होता था ?

उत्तर—मौर्योत्तर युग में भारत से मसाले रोम भेजे जाते थे। इसके अतिरिक्त रत्न, माणिक्य, मोती, हाथीदाँत व मलमल भी विदेश भेजे जाते थे। लोहे की वस्तुएँ, बर्तन आदि भी रोम साम्राज्य को भेजे जाते थे।

प्रश्न 11. सुदर्शन झील का निर्माण कब और किसने कराया ? इसका जीर्णोद्धार किन-किन शासकों ने कराया ?

उत्तर—एक अभिलेख के अनुसार सुदर्शन झील का निर्माण मौर्यकाल में एक स्थानीय राज्यपाल ने कराया था। इसका जीर्णोद्धार एक शासक रुद्रदमन तथा गुप्त शासक ने कराया था।

प्रश्न 12. चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन सेना कितने भागों में विभक्त थी ?

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना का प्रबंध एक विशेष सेना विभाग के नियंत्रण में था, जिसमें 30 सदस्य होते थे। प्रशासन की सुविधा के लिए 30 सदस्यों की समिति भी पुनः 6 भागों में बँटी हुई थी—

(1) पैदल सेना, (2) घुड़सवार सेना, (3) सामुद्रिक बेड़ों पर तैनात सेना, (4) रथ सेना, (5) यातायात की व्यवस्था करने वाली सेना, (6) हथियारों का प्रबंध करने वाली सेना।

प्रश्न 13. धर्म प्रवर्तक से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—धर्म प्रवर्तक का अर्थ है—धर्म का प्रचार करने वाला अथवा धर्म फैलाने वाला। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। इस धर्म के प्रचार के लिए उसने अपना सारा समय एवं तन-मन धन लगा दिया। इस प्रकार वह धर्म प्रवर्तक के रूप में जाना गया।

प्रश्न 14. कलिंग युद्ध के प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—अशोक ने कलिंग के राजा के साथ युद्ध किया था। इस युद्ध के निम्नलिखित प्रभाव सामने आए—

(1) इस युद्ध में अशोक विजयी रहा, लेकिन उसने अपार जनहानि देखी। इससे व्यथित होकर अशोक ने युद्ध लड़ना छोड़ दिया। (2) उसने भेरी घोष के स्थान पर 'धम्म घोष' की नीति अपनाई। (3) कलिंग का मगध राज्य में विलय हो गया।

प्रश्न 15. मौर्य साम्राज्य के चार प्रांतों तथा उनकी राजधानियों के नाम लिखिए।

उत्तर—मौर्य साम्राज्य के चार प्रांत तथा उनकी राजधानियों के नाम इस प्रकार हैं—

(1) उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, (2) अवंति की राजधानी उज्जयिनी, (3) दक्षिणपथ की राजधानी सुवर्णगिरी, (4) प्राच्य की राजधानी पाटलीपुत्र।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 16. भारत में बड़े पैमाने पर सोने का सिक्का चलाने वाले प्रथम शासक किस वंश के थे ?

उत्तर—भारत में बड़े पैमाने पर सोने का सिक्का चलाने वाले प्रथम शासक कुषाण वंश के थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. स्तंभ लेख क्या है ?

उत्तर—स्तंभ लेख साधारणत: आंतरिक प्रदेशों में पाए जाते हैं और ये धर्म प्रचार के प्रयोग में लाए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं—

1. दो तराई स्तंभ लेख—नेपाल की तराई में स्थित इन स्तंभ लेखों में अशोक के द्वारा बौद्ध के तीर्थ स्थानों की यात्राओं का वर्णन है।

2. सप्त स्तंभ लेख—यह सात स्तंभ लेख छ: स्थानों पर पाए जाते हैं जिनमें से दो दिल्ली के निकट स्थित हैं। इनमें धर्म प्रचार के उपायों का वर्णन किया गया है।

3. चार लघु स्तंभ लेख—इनमें से दो साँची तथा सारनाथ की लाटों पर और दो प्रयाग में अंकित हैं। अनुमान यह है कि इन्हें बौद्ध धर्म में व्याप्त मतभेदों को दूर करने हेतु खुदवाया गया था।

प्रश्न 2. मौर्य शासकों ने किस प्रकार व्यापार तथा वाणिज्य को बढ़ावा दिया ?

उत्तर—मौर्य शासकों ने व्यापार एवं वाणिज्य को निम्न प्रकार से बढ़ावा दिया—

1. आंतरिक व्यापार—इस काल में भारत का आंतरिक एवं बाहरी व्यापार उन्नति पर था। आंतरिक व्यापार स्थल मार्ग, नहरों व नदियों द्वारा होता था। व्यापार को प्रोत्साहित करने राज्य द्वारा सड़कें बनवाई गई। सबसे लंबी सड़क 1,500 कोस की थी, जो पाटलिपुत्र से उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत की ओर जाती थी। इसका एक मार्ग हिमालय की ओर, एक और मार्ग पाटलिपुत्र से दक्षिण तथा दूसरा पूर्व की ओर जाता था। पाटलिपुत्र, प्रयाग, राजगृह, काशी, कन्नौज, तक्षशिला, मथुरा और कोशांबी आदि प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र इन प्रमुख राजमार्गों द्वारा मिले हुए थे। इन पर दिशा-सूचक चिन्ह लगे होते थे। बहुत से उपमार्ग छोटे-छोटे व्यापारिक स्थलों व नगरों तक जाते थे। सड़कों तथा व्यापारियों की सुरक्षा का प्रबंध राज्य की ओर से होता था।

2. विदेशी व्यापार—इस काल में विदेशी व्यापार जल और स्थल दोनों मार्गों से होता था। बंदरगाहों में जहाजों के आने-जाने की व्यवस्था थी। राजधानी में विदेशी व्यापारियों की सुरक्षा हेतु एक बोर्ड की स्थापना की गई थी। भारत के व्यापारिक संबंध चीन, श्रीलंका, बर्मा, मिस्र एवं एशिया के साथ थे। विदेशी व्यापारियों का समूह उत्तर-पश्चिम से स्थल मार्ग द्वारा भारत आता था। भारत चीन से रेशमी वस्त्र और ईरान से मोती मँगाता था। मिस्र के साथ भी भारत के घनिष्ठ व्यापारिक संबंध थे। विदेशों से भारत आने वाली प्रमुख वस्तुओं में सोना, चाँदी, शराब तथा विलासिता की वस्तुएँ शामिल थीं।

प्रश्न 3. अशोककालीन मौर्य के शासन प्रबंध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—अशोक के उत्तराधिकार में विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ। अपने शासन के प्रारंभिक काल में उसने चंद्रगुप्त के सिद्धांतों का अनुकरण किया। उसके शासन-प्रबंध में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया तथा साम्राज्य की नीति का अनुसरण किया। शासन का स्वरूप स्वेच्छाचारी निरंकुश राजतंत्र बना रहा। केन्द्रीय, प्रांतीय व स्थानीय शासन भी पूर्ववत् चल रहे थे। परंतु कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन कर दिया और उसने अपने शासन के सिद्धांतों में परिवर्तन किया। उनके द्वारा परिवर्तित आदर्श सिद्धांत निम्नलिखित थे—

1. शासन व्यवस्था में परिवर्तन—अपने नवीन आदर्श को व्यवहार में लाने हेतु अशोक ने शासन-व्यवस्था में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया। उन्होंने नए पदाधिकारियों की नियुक्ति की, जो 'धर्ममहामात्र' कहलाए। इनका कार्य जनहित के कार्यों को देखना था। बहुत से अधिकारी अपने कार्यों को करने के साथ ही साथ धर्म प्रचार भी करते थे।

2. न्याय व्यवस्था में परिवर्तन—अशोक द्वारा कठोर दंड-विधान को तिलांजलि दे दी गई। वह दण्ड भोगने वालों में मानवीयता की भावना भरने का प्रयास करने लगे। उसने राजुकों (न्यायाधीशों) को पुरस्कार व दंड देने की पूरी स्वतंत्रता दे दी थी।

3. जनहित चिंतन—अशोक ने जनता को अपनी संतान माना और संतान के समान ही अपनी प्रजा के सुख तथा स्मृति के लिए हमेशा प्रयत्न करने लगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांत—अशोक के धम्म के मूलभूत सिद्धांत निम्नलिखित थे—

(1) संयम अथवा इंद्रियों पर नियंत्रण, (2) कृतज्ञता, (3) दया, (4) दान, (5) शौच अथवा पवित्रता, (6) आदर, (7) सत्य, (8) सेवा, (9) भावयुद्धि अथवा विचारों की पवित्रता, (10) दृढ़ इच्छा शक्ति, (11) सम्प्रति पत्ति अथवा सहायता करना।

प्रश्न 5. चोल राज्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—प्राचीन तमिल साहित्य से ज्ञात होता है कि ईसा पूर्व पहली शताब्दी से ईसा की पहली शताब्दी के अंत तक चोल राजाओं ने पाण्ड्य व चेर राज्यों पर विजय प्राप्त कर अपना साम्राज्य बढ़ा रहे थे। संगम साहित्य से ज्ञात होता है कि चोल राज्य के प्राचीन राजाओं में करिकाल सबसे प्रसिद्ध राजा थे। उसने चेर तथा पांड्य राज्यों को पराजित कर लंका पर आक्रमण किया, उसकी राजधानी उरैयूर थी। न्यायप्रियता के लिए वह अत्यधिक प्रसिद्ध था। करिकाल ने तंजौर से लगभग 15 मील दूर वेण्णि नामक स्थान पर एक युद्ध में ग्यारह शासकों को हराकर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस युद्ध ने करिकाल को महान् विजेता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।

करिकाल न केवल एक महान योद्धा था बल्कि कुशल शासक भी था। करिकाल ने अपने राज्य की आर्थिक उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। उसने कृषि व उद्योगों के विकास की योजनाएँ बनाईं और उन्हें कार्यान्वित किया। उसने जंगलों को खेती योग्य भूमि में परिवर्तित किया व सिंचाई की विशेष योजनाएँ लागू कीं। इस दृष्टि से उसने नहरें बनवाई तथा तालाबों की संख्या बढ़ाई। उसके शासन में उद्योगों की भी बहुत उन्नति हुई। कृषि व औद्योगिक विकास के फलस्वरूप चोल राज्य एक समृद्धशाली राज्य बन गया और करिकाल के शासनकाल में जनता सुखी जीवन व्यतीत करने लगी। टालमी के भूगोल में चोल प्रदेश के नगरों व बंदरगाहों का वर्णन मिलता है।

प्रश्न 6. मौर्य शासकों द्वारा किए गए आर्थिक प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—मौर्य शासकों द्वारा किए गए आर्थिक प्रयास निम्नलिखित हैं—

(1) कौटिल्य ने कृषकों, शिल्पियों और व्यापारियों से वसूल किए गए बहुत से करों का उल्लेख किया है। (2) संभवत: कर निर्धारण का कार्य सर्वोच्च अधिकारी द्वारा होता था। सन्निधता राजकीय कोषागार एवं भण्डार का संरक्षक होता था। (3) वास्तव में कर निर्धारण का विशाल संगठन पहली बार, मौर्यकाल में देखने को मिला। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में करों की यह सूची बहुत लंबी है। यदि वास्तव में सभी कर राजा के लिए जाते होंगे, तो प्रजा के पास अपने भरण-पोषण के लिए नाममात्र का ही धन बचता होगा। (4) ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय भंडार घर होते थे। इससे स्पष्ट होता है कि कर अनाज के रूप में वसूल किया जाता था। अकाल, सूखा या अन्य प्राकृतिक विपदा में इन्हीं अन्न-भण्डारों से स्थानीय लोगों को अन्न दिया जाता था। (5) मयूर, पर्वत और अर्द्धचंद्र के छाप वाली रजत मुद्राएँ मौर्य-साम्राज्य की मान्य मुद्राएँ थीं। ये मुद्राएँ कर वसूली एवं कर्मचारियों के वेतन के भुगतान में सुविधाजनक रही होगी। बाजार में लेन-देन भी इन्हीं से होता था।

प्रश्न 7. उत्तर मौर्य काल में शिल्पकला, व्यापार और नगरों के विकास के विषय में व्याख्या कीजिए। इसके विकास के क्या कारण थे ?

उत्तर—1. शिल्पकला—इस काल में खनन, धातु एवं शिल्प के कार्यों में पर्याप्त उन्नति हुई। प्राप्त अभिलेखों के अनुसार इस काल में बुनकरों, रंगरेजों, सुनारों, हाथी दाँत पर नक्काशी करने वाले कारीगरों, मूर्तिकारों, जौहरियों तथा लुहारों द्वारा विभिन्न वस्तुओं को तैयार किया जाता था।

2. व्यापार—इस काल में भारत और रोम के बीच व्यापार जोरों पर था। इसमें मुख्यत: विलासिता की वस्तुएँ, मणि, रत्न, मोती, मलमल, मसाले आदि भारत से रोम भेजे जाते थे।

3. नगर—व्यापार की वृद्धि के साथ व्यापारिक स्थलों पर नगरों का विकास भी शीघ्रता से होने लगा। तत्कालीन उत्तर भारत के प्रमुख नगरों के नाम हैं—वैशाली, पाटलिपुत्र, वाराणसी, कौशम्बी, हस्तिनापुर; मथुरा, इंद्रप्रस्थ, श्रावस्ती आदि। दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में से थे—धान्य, कटक, टागर, अमरावती, कोंडा, नागार्जुन, भड़ौच, सोपारा आदि।

Scanned with CamScanner

विकास के कारण—इस विकास के मुख्य कारण थे विकसित व्यापार उन्नत हस्तशिल्प कलाएँ शांति और सुव्यवस्था। लोग धनाढ्य थे। लोगों का जीवन स्तर ऊँचा था, उन्हें राज्य का संरक्षण प्राप्त था। अत: इस विकास में कोई बाधा नहीं थी।

प्रश्न 8. गुप्त शासकों का इतिहास लिखने में सहायक स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, अभिलेखों तथा सिक्कों की सहायता से लिखा गया। गुप्तकाल के सिक्के बड़ी मात्रा में पाए गए हैं। इनके अतिरिक्त कवियों ने अपने राजा अथवा स्वामी की प्रशंसा में प्रशस्तियाँ लिखी थीं जिनके आधार पर इतिहासकारों ने ऐतिहासिक तथ्य निकालने का प्रयास किया है। उदाहरण— इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रशस्ति समुद्रगुप्त के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। इसे समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने लिखा था। इससे पता चलता है कि वह संभवत: गुप्त सम्राटों में सबसे शक्तिशाली व गुण-सम्पन्न था।

प्रश्न 9. आधुनिक इतिहासकारों ने मगध को सबसे शक्तिशाली महाजनपद किस प्रकार बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—छठी से चौथी शताब्दी ई. पू. में मगध (आधुनिक बिहार) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। आधुनिक इतिहासकार इसके कई कारण बताते हैं—

(1) मगध क्षेत्र में खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी। (2) यहाँ लोहे की खदानें भी आसानी से उपलब्ध थीं जिससे हथियार तथा उपकरण बनाना सरल था। (3) जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे, जो सेना के एक महत्वपूर्ण अंग हुआ करते थे। इसके साथ ही गंगा व इसकी उपनदियों से आवागमन सरल व कम खर्चीला होता था। (4) आरंभिक जैन और बौद्ध लेखकों ने मगध की महत्ता का कारण विभिन्न शासकों की नीतियों को बताया है। इन लेखकों के अनुसार बिम्बिसार, अजातशत्रु और महापदम नंद जैसे प्रसिद्ध राजा अत्यंत महत्वाकांक्षी शासक थे और इनके मंत्री उनकी नीतियाँ लागू करते थे। (5) प्रारंभ में, राजगाह मगध की राजधानी थी। पहाड़ियों के बीच बसा राजगाह एक किलों से बंद शहर था। बाद में चौथी शताब्दी ई. पू. में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया। इसकी गंगा के रास्ते आवागमन के मार्ग पर महत्वपूर्ण अवस्थिति थी।

प्रश्न 10. छठी शताब्दी ई. पू. से छठी शताब्दी ई. तक कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए प्रयुक्त किन्हीं दो तरीकों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—छठी शताब्दी ई. पू. में भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि उपज बढ़ाने के लिए प्रयुक्त दो तरीके निम्नलिखित हैं—

(1) उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो छठी शताब्दी ई. पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी, वहाँ लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई आरंभ की गई। इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई के कारण उपज में अत्यधिक वृद्धि होने लगी। (2) उपज बढ़ाने का दूसरा तरीका तालाबों, नहरों, कुओं के माध्यम से सिंचाई करना था। यहाँ कृषक समुदायों और व्यक्तिगत लोगों ने मिलकर सिंचाई के साधन भी निर्मित किए, यद्यपि खेती की इन नई तकनीकों से उपज तो बढ़ी परंतु इसके लाभ एक समान नहीं थे। प्राय: उपज बढ़ाने में ब्राह्मण लोगों ने योगदान दिया। अच्छे बीज, कृषि उपकरण, पर्याप्त श्रम कराकर या स्वयं करके, सिंचाई स्रोत कुएँ, तालाब आदि का प्रयोग करके उपज बढ़ाने का प्रयास किया गया। नई भूमियाँ-भूमि दान से खेती के अंतर्गत आईं, इससे कुल उपज बढ़ती गई।

प्रश्न 11. "लोहे के फाल के प्रयोग ने संपूर्ण उपमहाद्वीप में कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—लोहे के फाल के प्रयोग ने पूरे उपमहाद्वीप में कृषि के क्षेत्र में निम्नलिखित क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया—

(1) आम लोगों और किसानों ने लौह औजारों व उपकरणों का प्रयोग करके घने जंगलों को काटा और बड़े वृक्षों की लकड़ियाँ प्राप्त की तथा जंगलों को काटकर उपजाऊ कृषि योग्य भूमि भी प्राप्त की गई। (2) जिन

Scanned with CamScanner

क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा होती थी, वहाँ लोहे से बने हल में उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। (3) लोहे के फाल वाले हलों से फसलों की उपज बढ़ने लगी परंतु यह उपमहाद्वीप के कुछ भागों में ही सीमित था। उदाहरण— पंजाब व राजस्थान जैसे अर्द्ध शुष्क भूमि वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग 20 वीं सदी के आरंभ में शुरू हुआ। (4) लोहे के उपकरणों ने कुएँ खोदने, बाँध बनाने, तालाब खोदने व नहरों के निर्माण में योगदान देकर सिंचाई की सुविधाओं का विकास व विस्तार किया जिससे लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। इसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन भी बढ़ा। (5) अनेक क्षेत्रों में लोहे के फाल की सहायता से छोटे-छोटे जोतों के स्वामियों ने गहराई से भूमि को जोता या धान के लिए खेत तैयार की। इससे छोटे किसानों ने वन्य क्षत्रों में कृषि कार्य का विस्तार किया।

प्रश्न 12. गुप्तकाल की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गुप्तकालीन युग कल्याणकारी राज्य का युग था। शासन का प्रमुख आदर्श जनहित का कार्य करना था। दंड व्यवस्था उदार थी, फिर भी अपराध बहुत कम होते थे। जनता सुखी थी और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही थी। जनता राजा से स्नेह करती थी और राजा जनहित को ही सर्वोपरि मानता था। इस प्रकार कहा जाता है कि गुप्तकाल वर्तमान काल के किसी भी कल्याणकारी राज्य से उत्तम अवस्था में था। यहाँ की तत्कालीन शासन व्यवस्था के विभिन्न पक्षों का वर्णन इस प्रकार है—

1. न्याय व्यवस्था—गुप्तकाल में सम्राट न्याय का अंतिम और सर्वोपरि शक्ति माना जाता था। उसके नीचे अनेक स्तरों पर न्यायालय थे। सम्राट के पास बहुत कम मुकदमे आते थे। यहाँ न्याय तुरंत देने की व्यवस्था थी। दण्ड के लिए नियम कठोर थे अत: प्राणदण्ड भी दिया जाता था।

2. केन्द्रीय शासन—तत्कालीन शासन-व्यवस्था की जानकारी के मुख्य स्रोतों में चीनी यात्री फाह्यान का वृतांत महत्वपूर्ण है। गुप्तकालीन साम्राज्य सम्राट के अधीन था, किन्तु इसका स्वरूप मांडलिक भी था क्योंकि साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के राजा तथा सामंत सम्राट को अपना अधिपति मानते थे। सम्राट के कार्यों में परामर्श देने हेतु एक मंत्रीमंडल का गठन किया जाता था। गुप्तकालीन शिलालेखों से पता चलता है कि मंत्रीमंडल में अमात्य, संधि व युद्धमंत्री, कागज पत्र का मंत्री तथा महादण्ड नामक प्रमुख मंत्री थे। इस प्रकार गुप्तकालीन केन्द्रीय शासन में विभागीय व्यवस्था विद्यमान थी। प्रत्येक विभाग या कुछ संबंधित विभागों को एक मंत्री देखता था।

3. प्रांतीय शासन—सम्राट द्वारा स्वयं शासित साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक प्रांत भुक्ति या देश कहलाता था। प्रांतों के अधिकारियों की नियुक्ति राजा करते थे। ये अधिकारी गोपना, उपरिक तथा कुमारात्य कहलाते थे। प्रांतों को छोटे-छोटे जिलों में विभक्त किया गया था जिसे 'विषय' कहते थे। जिले ग्रामों में बँटे हुए थे जिनके प्रबंध का दायित्व ग्रामीण व भोजक पर होता था। ग्रामों में पंचायतें गठित की गई थीं जो स्वावलंबी होती थीं। पंचों का आदर किया जाता था। ग्राम प्रधान का पद यहाँ अत्यधिक महत्वपूर्ण होता था।

प्रश्न 13. अभिलेखों में भूमिदान के विषय में क्या जानकारी मिलती है ?

उत्तर—ईसवी की आरंभिक शताब्दियों में भूमिदान के प्रमाण मिलते हैं। इनमें से कई भू-दानों का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है। कुछ अभिलेख पत्थरों पर खुदे हुए थे। परंतु अधिकांश ताम्रपत्रों पर खुदे होते थे। इन्हें संभवत: भूमिदान पाने वाले लोगों को प्रमाण के रूप में दिया जाता था। भूमिदान के जो प्रमाण मिले हैं, वे दान प्राय: धार्मिक संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिए गए थे। अधिकांश अभिलेख संस्कृत में थे। विशेषकर सातवीं शताब्दी के बाद में अभिलेखों के कुछ भाग संस्कृत में हैं और कुछ तमिल व तेलगू जैसी स्थानीय भाषाओं में हैं।

भूमिदान के प्रचलन से राज्य तथा किसानों के मध्य संबंध की झलक भी मिलती है। परंतु कुछ लोग ऐसे भी थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियंत्रण नहीं था। इनमें पशुपालक, शिकारी, शिल्पकार, संग्राहक मछुआरे और जगह-जगह घूमकर खेती करने वाले लोग शामिल थे।

प्रश्न 14. खेती की नयी तकनीकों से खेती से जुड़े लोगों की सामाजिक स्थिति का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—खेती की नई तकनीकों ने विकास के अनेक मार्ग खोल दिए। इन तकनीकों से उपज अवश्य बढ़ी। परंतु इससे खेती से जुड़े लोगों में मतभेद बढ़ने लगे। बौद्ध कथाओं में भूमिहीन खेतिहर श्रमिकों, छोटे किसानों तथा बड़े जमींदारों का उल्लेख मिलता है। पाली भाषा में छोटे किसानों और जमींदारों के लिए 'गहपति'

Scanned with CamScanner

शब्द का प्रयोग किया जाता था। बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम-प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे। वे किसानों पर नियंत्रण रखते थे। ग्राम प्रधान का पद प्राय: वंशानुगत होता था। आरंभिक तमिल संगम साहित्य में भी खेती से जुड़े विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख मिलता है, जैसे—वेल्लाल या बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्वर और दास अणिमई। यह संभव है कि इस वर्ग विभेद का आधार भूमि का स्वामित्व, श्रम और नई प्रौद्योगिकी का उपयोग रहा हो। ऐसी परिस्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था।

प्रश्न 15. गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों पर दृष्टि डाले तो पता चलता है कि ये सभी कारण साधारणत: वही है जो मौर्यकाल के पतन के कारण थे—

1. दुर्बल उत्तराधिकारी—स्कंदगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी बहुत कमजोर थे। वे इतने विशाल साम्राज्य की सुरक्षा करने में समर्थ नहीं थे। गुप्त साम्राज्य अन्य साम्राज्यों की तरह सम्राट की व्यक्तिगत शक्ति व श्रेष्ठता पर ही आधारित था। दुर्बल शासकों के सिंहासनारुढ़ होने से केन्द्र का नियंत्रण प्रांतों पर कम हो गया और साम्राज्य भी बिखर गया।

2. सेना की निर्बलता—गुप्तकाल सुख व समृद्धि का युग था। अत: उस काल में सर्वत्र लंबे समय तक शांति रही। परिणामस्वरूप सेना को युद्धों का प्रशिक्षण मिलना बंद हो गया और धीरे-धीरे यह कमजोर हो गया।

3. साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार—गुप्त साम्राज्य की विशालता भी उसकी अवनति का एक प्रमुख कारण था क्योंकि इतने बड़े साम्राज्य का नियंत्रण केवल योग्य शासकों के लिए ही संभव था। उत्तरकालीन दुर्बल गुप्त शासकों के लिए इस विशाल साम्राज्य पर शासन कर पाना कठिन हो गया।

4. आर्थिक कठिनाई—कुमारगुप्त व स्कंधगुप्त ने हूणों से युद्ध किया। इसमें बहुत-सा धन खर्च हुआ और गुप्त साम्राज्य आर्थिक संकट में पड़ गया।

5. बौद्ध धर्म का प्रभाव—गुप्त साम्राज्य के अंतिम शासकों-बालादित्य तथा बुद्धगुप्त ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। अत: उन्होंने अहिंसा की नीति के आधार पर सैन्य संगठन पर ध्यान नहीं दिया। अत: यह सेना गुप्त साम्राज्य की रक्षा करने में असमर्थ रही।

6. हूणों का आक्रमण—इस साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण हूणों का आक्रमण था। हूणों के लगातार आक्रमणों का सामना यह दुर्बल साम्राज्य न कर पाया। हूणों के आक्रमण ने केन्द्रीय सत्ता को इतना दुर्बल बना दिया कि प्रांतीय शासक सरलता से स्वतंत्र हो गया।

प्रश्न 16. "ईसा पूर्व छठी शताब्दी में कस्बों के विकास के पर्याप्त परिणाम हैं, कृषि में हुए परिवर्तनों के साक्ष्य हैं और राजनैतिक परिवर्तनों के उपमहाद्वीप में पर्याप्त प्रमाण हैं।" इस तीन प्रमुख परिवर्तनों के परिणाम की चर्चा कीजिए।

उत्तर—ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुए परिवर्तनों के तीन आयामों में बदलाव के पर्याप्त परिणाम निम्नलिखित हैं—

(1) इस काल में कृषि के क्षेत्रों में अत्यधिक परिवर्तन देखने को मिले। करों की बढ़ती माँग को पूरा करने हेतु किसानों ने अन्न की उपज बढ़ाने के लिए नए उपाए ढूँढे। किसानों में नयी श्रेणी के किसान दिखाई दिए। वे किसान जो बड़े भू-स्वामी या सामंत अथवा मध्य श्रेणी के किसान व कुछ भूमिहीन किसान थे। इस काल में लोहे की फाल के हल, सिंचाई के लिए कुँए, तालाब, नहरों तथा जल संग्रहालयों के साथ-साथ धान की रोपाई की उपज बढ़ाने के लिए नए-नए प्रयोग आदि दिखाई दिए। (2) इस काल में नए शहर हड़प्पा सभ्यता के लगभग 1,500 वर्षों के पश्चात् अर्थात् एक लंबे अंतराल के बाद दिखाई दिए। ये नए शहर व्यापार, वाणिज्य के केन्द्र थे। इनमें से अधिकांश जनपदों अथवा महाजनपदों या राज्यों की राजधानियों के रूप में स्थापित थे। (3) इस काल में हमें प्रारंभिक साम्राज्य और महत्वपूर्ण राज्यों के सामने आने के प्रमाण संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में दिखाई दिए। मगध और मौर्य साम्राज्य उभर कर सामने आए। 16 महाजनपदों का अस्तित्व धीरे-धीरे विशाल मौर्य साम्राज्य में विलीन हो गया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 17. आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्पकला के उत्पादन के प्रमाणों की चर्चा कीजिए। हड़प्पा के नगरों के प्रमाण से ये प्रमाण कितने भिन्न हैं ? (NCERT)

उत्तर—हड़प्पा संस्कृति के नगरों की व्यापक खुदाइयाँ की गई हैं। इन्हीं खुदाइयों से हड़प्पा संस्कृति की शिल्पकला के उत्पादनों के व्यापक प्रमाण भी मिले हैं। इसके विपरीत आरंभिक ऐतिहासिक नगरों की व्यापक खुदाइयाँ संभव नहीं है इसका प्रमुख कारण यह है कि इन क्षेत्रों में आज भी लोग निवास करते हैं। इन ऐतिहासिक नगरों से विभिन्न प्रकार के पुरावशेष भी प्राप्त हुए हैं। इन नगरों में शिल्प उत्पादन के कुछ अन्य प्रमाण अभिलेखों से भी प्राप्त हुए हैं।

आरंभिक ऐतिहासिक नगरों में शिल्पकला उत्पादन के प्रमाण—(1) इन स्थलों से उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र अर्थात् काले रंग की पॉलिश वाले मिट्टी के बर्तन कहा जाता है। इन पात्रों का प्रयोग संभवत: धनी लोग करते होंगे। (2) यहाँ से सोने, चाँदी, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे से बने गहनों, उपकरणों, पकी मिट्टी, सीप तथा हथियारों के प्रमाण भी मिले हैं। (3) दानात्मक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन नगरों में धोबी, बुनकर, लिपिक, लोहार, बढ़ई, सुनार तथा कुम्हार आदि शिल्पकार रहते थे। लोहार लोहे का सामान बनाते थे। हड़प्पा के नगरों से लोहे का प्रयोग किए जाने के प्रमाण भी मिले हैं। (4) व्यापारियों व उत्पादकों ने अपने संघ का गठन किया था, जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। ये श्रेणियाँ कच्चा माल खरीदकर सामान तैयार करते थे और उसे बाजार में बेच देते थे।

प्रश्न 18. महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन कीजिए। (NCERT)

उत्तर—महाजनपद के नाम से 16 राज्यों का उल्लेख बौद्ध तथा जैन धर्म के आरंभिक ग्रंथों में मिलता है। यद्यपि महाजनपदों के नाम इन ग्रंथों के समान नहीं हैं तब भी मगध, पांचाल, वज्जि, कौशल, गांधार, कुरु तथा अवंति आदि नाम एक समान हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि ये महाजनपद अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे होंगे। इन महाजनपदों के विशिष्ट अभिलक्षण निम्नलिखित हैं—

(1) महाजनपद का विकास 600 ई.पू. से 320 ई.पू. के बीच हुआ। (2) महाजनपदों की संख्या 16 थी। इनमें लगभग 12 राजतंत्रीय राज्य और 4 गणतंत्रीय राज्य थे। (3) अधिकांश महाजनपदों पर एक राजा का शासन होता था। परंतु गण और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों पर बहुत से लोगों का समूह शासन करता था। इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध इन्हीं गणों से संबंधित थे। वज्जि संघ की तरह कुछ राज्यों में भूमि सहित अनेक आर्थिक स्रोतों पर राजाओं का सामूहिक नियंत्रण होता था। (4) महाजनपदों को प्राय: लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता था। (5) प्रत्येक महाजनपद की अपनी एक राजधानी होती थी जो प्राय: किले से घिरी होती थी। किलेबंद राजधानियों के रख-रखाव, प्रारंभी सेनाओं तथा नौकरशाही के लिए अधिक आर्थिक साधनों की आवश्यकता होती थी। (6) लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से ब्राह्मणों ने संस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना आरंभ की। इनमें शासन सहित अन्य सामाजिक वर्गों हेतु नियमों का निर्धारण किया गया और यह अपेक्षा की गई कि शासक क्षत्रिय वर्ग से ही होंगे। (7) शासकों का काम व्यापारियों, किसानों, शिल्पकारों से कर तथा उपहार (भेंट) लेना माना जाता था। (8) अपने राज्यों के लिए धन एकत्रित करने हेतु पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करना भी वैध माना जाता था। (9) धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेवाएँ तथा नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए। बचे शेष राज्य अब भी सहायक सेना पर निर्भर थे। सैनिक प्राय: कृषक वर्ग से ही भर्ती किए जाते थे।

प्रश्न 19. सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण इतिहासकार कैसे करते हैं ? (NCERT)

उत्तर—सामान्य लोगों के जीवन की लिखित जानकारी विरले ही छोड़ी गई है। इसलिए उनके जीवन का पुनर्निर्माण करने हेतु विभिन्न प्रकार के स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। इनमें से प्रमुख कुछ स्रोत निम्नलिखित हैं—

(1) खुदाइयों में विभिन्न प्रकार के अनाजों के दाने तथा जानवरों की हड्डियाँ मिली हैं। इनमें लोगों के भोजन संबंधी जानकारी मिलती है। (2) भवनों तथा पात्रों के अवशेषों से उनके घरेलू जीवन का ज्ञान होता है। (3) अभिलेखों में विभिन्न प्रकार के शिल्पियों व शिल्पों का उल्लेख मिलता है। इनसे साधारण लोगों के आर्थिक जीवन की झलकियाँ मिलती हैं। (4) कुछ अभिलेखों व पांडुलिपियों में राजा प्रजा संबंधी, जैसे—विभिन्न प्रकार

Scanned with CamScanner

के करों से अनुमान लगाया जाता है कि सामान्य लोग सुखी थे अथवा दुःखी। (5) बदलते कृषि तंत्र व अन्य उपकरण साधारण लोगों के बदलते जीवन पर प्रकाश डालते हैं। उदाहरण—लोहे के प्रयोग से अनुमान लगाया जा सकता है कि कृषि करना आसान हो गया होगा और उत्पादन बढ़ गया होगा। इससे सामान्य कृषक समृद्ध बने होंगे। (6) भारतीय समाज के साधारण लोगों के विषय में वैदिक साहित्य से पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसके साथ ही लोककथाओं से भी जीवन की जानकारी मिलती है। (7) व्यापार संघों से उत्पादकों के हितों की रक्षा का संकेत मिलता है। (8) विभिन्न साहित्य साधनों से उत्तर भारत, दक्षिण भारत व कर्नाटक जैसे अनेक क्षेत्रों में विकसित हुए बस्तियों के विषय में जानकारी मिलती है। इनसे दक्कन तथा दक्षिण भारत में चरवाहा बस्तियों के भी साक्ष्य मिलते हैं। (9) इतिहासकार शवों के अंतिम संस्कार के ढंग से भी साधारण नागरिकों के जीवन का चित्रण करते हैं। साधारण लोगों के शवों के साथ विभिन्न प्रकार के लोहे के बने हथियारों व उपकरणों को भी दफना दिया जाता था। (10) नगरों में रहने वाले सर्वसाधारण लोगों में धोबी, बुनकर, बढ़ई, कुम्हार, लिपिक, स्वर्णकार, लौहकार, छोटे व्यापारी व छोटे धार्मिक व्यक्ति आदि होते थे।

प्रश्न 20. पांड्य सरदार (स्रोत 3) को दी जाने वाली वस्तुओं की तुलना दंगुन गाँव की (स्रोत 8) वस्तुओं से कीजिए। आपको क्या समानताएँ और असमानताएँ दिखाई देती हैं ? **(NCERT)**

उत्तर—पांड्य सरदार को दी जाने वाली वस्तुओं में हाथी दाँत, हिरणों के बालों से बने चंवर, सुगंधित लकड़ी, मधु चंदन, गेहूँ, हल्दी, सुरमा व इलायची आदि अनेक वस्तुएँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आम, नारियल, गन्ना, केला, फूल, फल, प्याज, जड़ी-बूटी तथा अनेक प्रकार के पशु-पक्षी भी उपहार में दिए जाते थे।

इसके विपरीत दंगुन गाँव की भेंट स्वरूप दी जाने वाली वस्तुओं में जानवरों की खाल, मदिरा, नमक घास, कोयला, खादिर वृक्ष के उत्पाद दूध, दही, फूल तथा अन्य खनिज पदार्थों को भी शामिल किया गया था। इसके अलावा इन दोनों को मिलने वाली भेंटों में कुछ समानताएँ और असमानताएँ भी थीं, जो इस प्रकार हैं—

समानताएँ—जब पांड्य सरदार सेनगुत्तुवन वन यात्रा पर गए थे, तब उन्हें अपनी प्रजा से चंदन गेरु, मधु, सुगंधित लकड़ी, शेर, हाथी, बंदर, भालू, बाघों के बच्चे, लोमड़ी, मोर, जंगली मुर्गे, कस्तूरी मृग तथा बोलने वाले तोते आदि अनेक भेंट मिले थे। फूलों को छोड़कर इन दोनों सूचियों में कोई विशेष समानता नहीं दिखाई देती। यह संभव है कि दंगुन गाँव की तरह पांड्य सरदार भी भेंट में मिलने वाले जानवरों की खाल का उपयोग करते हों। इससे स्थानीय रूप से उपलब्ध वस्तुओं के भेंट में दिए जाने का संकेत मिलता है।

असमानताएँ—पांड्य सरदार को मिलने वाली वस्तुओं की सूची गुप्त अथवा वाकाटक सरदार को मिलने वाली वस्तुओं की सूची को अपेक्षा अधिक विशाल है। इससे भी बड़ी असमानता तो इन वस्तुओं के प्राप्त करने के तरीके में है। पांड्य सरदार को लोग खुशी-खुशी तथा नाच-गाकर वस्तुएँ उपहार में देते थे। इसके विपरीत भूमि के दान से पहले दंगुन गाँव के निवासियों को अपने यहाँ की वस्तुएँ राज्य तथा उसके अधिकारियों को देनी पड़ती थी, क्योंकि यह उनका कर्तव्य था।

प्रश्न 21. अभिलेखशास्त्रियों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइए। **(NCERT)**

उत्तर—अभिलेखशास्त्रियों को अभिलेखों का अध्ययन करने वाला विद्वान कहा जाता था। इनकी प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) अभिलेखों में कभी-कभी अक्षरों को बहुत हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ना कठिन होता है। (2) अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिससे अक्षर लुप्त हो जाते हैं जिससे उन्हें पढ़ना कठिन हो जाता है। (3) अभिलेखशास्त्री कुछ अभिलेखों पर लिखी लिपि को पढ़ने में असमर्थ होते हैं क्योंकि उनके समकालीन अभिलेखों पर कहीं भी उस लिपि का उल्लेख नहीं मिलता। दो भाषाओं के समानांतर प्रयोग के अभाव में वे असहाय हो जाते हैं। (4) अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के विषय में पूर्ण रूप से ज्ञान होना भी हमेशा आसान नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं। (5) इस संबंध में एक और मौलिक समस्या भी है। वह यह है कि जिस वस्तु को हम आज राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हैं वह सब कुछ अभिलेखों में अंकित नहीं है। अभिलेख प्रायः बड़े और विशेष अवसरों का ही वर्णन करते हैं। (6) कई अभिलेखों में एक ही राजा के लिए भिन्न-भिन्न नामों, उपाधियों या सम्मानजनक प्रतीकों और

Scanned with CamScanner

संबोधनों का प्रयोग किया गया है। अत: अभिलेखशास्त्रियों को उन्हें पढ़ने या उनका अर्थ निकालने में बहुत कठिनाई होती है। (7) बहुत बार एक ही शासक या उसके वंश से संबंधित अनेक क्षेत्रों व देशों में मिलने वाले अभिलेखों में लगभग एक ही युग में भिन्न-भिन्न भाषाओं एवं लिपियों का प्रयोग हुआ है। अत: इसे भी पढ़ने में उन्हें मुश्किल होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मौर्य के नागरिक प्रबंध के विषय में आप क्या जानते हैं ? विवेचना कीजिए।

उत्तर—चंद्रगुप्त मौर्य के शासन प्रबंध के विषय में विस्तृत जानकारी कौटिल्य के अर्थशास्त्र और मेगस्थनीज की इण्डिका से मिलती है। चंद्रगुप्त मौर्य के नागरिक प्रबंध का वर्णन निम्नलिखित है—

1. स्थानीय शासन—स्थानीय शासन के अंतर्गत दो प्रशासनों को रखा गया है—

(i) नगरीय प्रशासन—मेगस्थनीज ने अपने भारत वर्णन में पाटलिपुत्र (पटना) नगर के संदर्भ में लिखा है कि वह एक विशाल नगर था। इस प्रकार के चारों ओर लकड़ी की एक विशाल दीवार थी, जिसमें 64 दरवाजे तथा 570 बुर्ज थे। इस नगर का प्रबंध 30 सदस्यों के एक आयोग द्वारा किया जाता था। जिसमें 5-5 सदस्यों की छ: समितियाँ थीं। प्रत्येक समिति के कार्य भिन्न-भिन्न थे। पहली समिति नगर के कला कौशल की देखभाल करती थी, दूसरी विदेशियों के निवास व भोजन का प्रबंध करती थी, तीसरी जन्म व मृत्यु का लेखा-जोखा रखती थी, चौथी का कार्य माप-तौल से संबंधित कारोबार करने वालों की देखभाल करना था, पाँचवी वस्तुओं के निर्माण एवं उनकी गुणवत्ता की जाँच-पड़ताल करती थी और छठी समिति का कार्य बिक्री वसूल करना था।

(ii) ग्राम प्रशासन—शासन की छोटी इकाई ग्राम थी। 'ग्रामिणी' नामक अधिकारी इसका प्रबंध करता था। इसकी सहायता के लिए एक सभा होती थी। जो ग्राम के हित के लिए सड़कें, पुल, तालाब तथा अतिथि गृह का प्रबंध करती थी। ग्रामिणी के ऊपर 'गोप' तथा 'स्थानिक' आदि अधिकारी होते थे।

2. न्याय—न्याय से संबंधित कार्यों का सर्वोच्च अधिकारी राजा स्वयं होता था। नगरों और गाँवों का न्याय 'महामात्र' करते थे। यहाँ की दण्ड व्यवस्था बहुत कठोर थी। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार 18 प्रकार के दंड दिये जाते थे। कठोर दंड की व्यवस्था होने के कारण अपराध बहुत कम होते थे। यदि छोटे न्यायालयों के निर्णय में कोई कमी हो जाती थी तो सम्राट स्वयं निर्णय करता था।

3. सिंचाई—चंद्रगुप्त के शासनकाल में सिंचाई कुओं, तालाबों तथा नहरों से होती थी। सिंचाई विभाग में विभिन्न अधिकारी नियुक्त किए जाते थे। नगरों से प्राप्त जल के बदले में किसान सरकार को कर देते थे।

4. सेना का प्रबंध—चंद्रगुप्त मौर्य के पास अपने विशाल साम्राज्य की रक्षा हेतु एक सुसंगठित और सुदृढ़ सेना थी जिसमें 6 लाख पैदल, 30 हजार घुड़सवार, 9000 हाथी और 8000 रथ थे। सेना के प्रबंध हेतु 30 सदस्यों की समिति थी जो 6 समितियों में विभाजित थी। सेना में निम्नलिखित विभाग थे—(i) पैदल, (ii) घुड़-सवार, (iii) रथ, (iv) हाथी, (v) रसद विभाग, (vi) समुद्री बेड़ा, (vii) अस्त्र-शस्त्र विभाग।

इन सैनिकों को राजकोष से वेतन दिया जाता था।

5. सड़कें—सड़कों के प्रबंध व व्यवस्था हेतु एक अलग विभाग था जिसके अधिकारी इसके निर्माण, सुधार एवं विस्तार का कार्य करते थे। सड़कों के किनारे पर मील के पत्थर लगे होते थे जो दूरी बताने का कार्य करते थे। यहाँ एक विशाल सड़क भी थी जो तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक जाती थी। सड़कों के किनारे पीने के लिए कुएँ, वृक्ष तथा धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया था। सड़कों की अच्छी दशा के कारण व्यापार में भी उन्नति हुई।

6. भूमिकर—कृषकों को उनकी खेती की पैदावार का 1/6 भाग भू-राजस्व के रूप में लिया जाता था परंतु आपातकाल में इसे बढ़ा दिया जाता था। भूमि, वन एवं खानों पर राज्य का अधिकार होता था। उपज से प्राप्त धन राज्यहित व सैन्य संगठन की व्यवस्था करने में लगा दिया जाता था।

प्रश्न 2. मौर्यकाल की कला का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—मौय काल की कला—मौर्य काल का भारत के सांस्कृतिक इतिहास में अत्यधिक महत्व है।

Scanned with CamScanner

क्योंकि इस काल में संपूर्ण भारत एक सत्ता के अधीन था। उस युग के अवशेषों के आधार पर ही तत्कालीन नगर की रचना, मूर्ति निर्माण कला, लेख, शिलालेख तथा गुहालेखों की जानकारी प्राप्त होती है।

नगर एवं स्तूप—पाटलिपुत्र इस युग की विशाल नगरी थी। सेल्युकस निकेटर का दूत मेगस्थनीज पाटलिपुत्र की प्रशंसा करते हुए कहता है कि, "भारत में जो सबसे बड़ा नगर है वह पालिब्रोथा (पाटलिपुत्र) कहलाता है। यह गंगा और सोन नदी के तट पर स्थित है। इसकी लंबाई 80 स्टैडिया और चौड़ाई 15 स्टैडिया है। इसके चारों ओर लकड़ी की दीवार बनी है, जिसके बीच में तीर छोड़ने के बहुत से छेद बने हुए हैं। नगर के बाहर चारों ओर गहरी खाई है जो राज्य की सुरक्षा के लिए तथा बाहर की गंदगी बहाने व दूर करने के काम आती है। इसकी गहराई 45 फीट तथा चौड़ाई 600 फीट है। शहरों के चारों ओर की प्राचीर में 64 द्वार तथा 570 बुर्ज हैं।" प्राचीर बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक ने 84 हजार स्तूपों व विहारों का निर्माण कराया। दिव्यावदान और महावंश में भी इसका वर्णन किया गया है।

स्तूप—ह्वेनसांग ने अनेक स्तूपों को अपनी आँखों से देखा। साँची का स्तूप अशोक ने ईंटों से बनवाया था। इसी प्रकार मौर्य कालीन अरहुत और साँची के स्तूप अपनी कला के लिए जग प्रसिद्ध है। अशोक के समय में कश्मीर के श्रीनगर तथा नेपाल के ललित पाटन नामक नगरों का निर्माण हुआ। इस काल में पर्वतों को काटकर गुहा-गृह का निर्माण करने की कला का प्रारंभ भी हुआ। जिसने आगे चलकर अजंता और एलोरा की गुहा-कला के रूप में विकास किया। अशोक और दशरथ द्वारा निर्मित गुहा-गृह आज भी नागार्जुनी पहाड़ियों में विद्यमान हैं। इनकी दीवारें शीशे की तरह चिकनी तथा चमकदार थीं।

स्तंभ तथा मूर्तियाँ—अशोककालीन कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण उनके द्वारा निर्मित स्तंभ हैं। उसका सारनाथ का स्तंभ राजमुख (बिहार) का स्तंभ तथा लुम्बिनीबान का स्तंभ कला के आदर्श नमूने माने जाते हैं। मूर्तिकला ने भी मौर्य काल में अत्यधिक प्रगति की। इस काल की सर्वाधिक प्रसिद्ध मूर्ति आगरा और मथुरा के मध्य परखम नामक गाँव में मिली है। यह मूर्ति 7 फीट ऊँची है और भूरे बलुए पत्थर की बनी हुई है इसी काल की अन्य मूर्तियाँ बेसनगर में मिली हैं। यह मूर्ति किसी स्त्री की है। पटना और डीडारगंज में भी दो अन्य मूर्तियाँ मिली हैं जिन्हें इतिहासकार मौर्यकालीन ही मानते हैं।

प्रश्न 3. मौर्य प्रशासन के प्रमुख अभिलक्षणों की चर्चा कीजिए। अशोक के अभिलेखों में इनमें से कौन-कौन से तत्वों के प्रमाण मिलते हैं ? **(NCERT)**

उत्तर—मौर्य प्रशासन के लगभग सभी प्रमुख अभिलक्षणों की जानकारी अशोक के अभिलेखों से मिलती है—जैसे-राजा-प्रजा संबंध, राजनीतिक केन्द्र, प्रमुख अधिकारी व उनके कर्तव्य आदि। इन अभिलेखों में आधुनिक पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमांत प्रांत से लेकर आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, और उत्तराखंड तक प्रत्येक स्थान पर एक जैसे संदेश उत्कीर्ण किए गए थे। मौर्य साम्राज्य के इन महत्वपूर्ण अभिलक्षणों का वर्णन निम्नलिखित हैं—

1. पाँच प्रमुख राजनीतिक केन्द्र—मौर्य साम्राज्य का सबसे बड़ा केन्द्र मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलीपुत्र था। इसके अतिरिक्त अशोक के अभिलेखों में साम्राज्य के चार प्रांतीय केन्द्रों का उल्लेख भी मिलता है। ये केन्द्र थे-तक्षशिला उज्जयिनी, तोसलि (तोशाली) व सुवर्णगिरी।

2. प्रांतीय केन्द्रों का चुनाव—प्रांतीय केन्द्रों का चुनाव बड़े ध्यान से किया गया था। तक्षशिला तथा उज्जयिनी दोनों लंबी दूरी वाले महत्वपूर्ण व्यापार वाले मार्ग पर स्थित थे। कर्नाटक में सुवर्णगिरी (सोने का पहाड़) सोने की खदान के कारण प्रसिद्ध था।

3. आवागमन का आसान होना—साम्राज्य के संचालन हेतु स्थल व जल दोनों ही मार्गों से आवागमन का आसान होना अत्यंत आवश्यक था। राजधानी से दूसरे प्रांतों तक जाने में कई सप्ताह व महीने लग जाते थे। ऐसे में यात्रियों के लिए खाने-पीने और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती थी। ऐसा माना जाता है कि यहाँ सेना सुरक्षा का प्रमुख माध्यम रहा होगा।

4. शासन-व्यवस्था का असमान होना—मौर्य साम्राज्य अत्यधिक विशाल था। इसके अतिरिक्त साम्राज्य में शामिल क्षेत्र बड़े विविध व अलग प्रकार के थे—(i) अफगानिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र, (ii) उड़ीसा के तटवर्ती क्षेत्र। इतने विशाल व विविधता वाले साम्राज्य का प्रशासन एकसमान होना संभव नहीं था। परंतु यह संभव है कि सबसे कड़ा प्रशासनिक नियंत्रण साम्राज्य की राजधानी तथा उसके समीप के प्रांतीय केन्द्रों पर रहा हो।

5. समिति तथा उपसमितियाँ—मेगस्थनीज ने सैनिक गतिविधियों के संचालन हेतु एक समिति तथा छः उपसमितियों का उल्लेख किया है—

Scanned with CamScanner

(i) इनमें से एक उपसमिति का काम नौसेना का संचालन करना था। (ii) दूसरी यातायात और खान-पान का संचालन करती थी। (iii) तीसरी का काम पैदल सैनिकों का संचालन करना था। (iv) चौथी का अश्वारोहियों, पाँचवी का रथारोहियों का संचालन करना था। (v) छठी का काम हाथियों का संचालन करना था।

दूसरी उपसमिति के पास बहुत से काम थे, जैसे—हथियारों को ढोने हेतु बैलगाड़ियों की व्यवस्था करना, सैनिकों के लिए भोजन व जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था करना व सैनिकों की देख-रेख हेतु सेवकों व शिल्पकारों की नियुक्ति करना।

6. धम्म महामात्रों की नियुक्ति—सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य को संगठित रखने का अथक् प्रयास किया। ऐसा उन्होंने धर्म के प्रचार द्वारा किया। धम्म के सिद्धांत बहुत साधारण और सार्वभौमिक थे। अशोक का मानना था कि धम्म का पालन करके लोगों का जीवन इस संसार में तथा इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा। अत: धम्म के प्रचार के लिए धम्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति की गयी। इसका उल्लेख अभिलेखों में भी मिलता है।

प्रश्न 4. यह 20 वीं शताब्दी के एक सुविख्यात अभिलेखशास्त्री डी.सी. सरकार का वक्तव्य है—भारतीयों के जीवन, संस्कृति और गतिविधियों का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका प्रतिबिंब अभिलेखों में नहीं है। चर्चा कीजिए। **(NCERT)**

उत्तर—सुप्रसिद्ध अभिलेखशास्त्री डी.सी. सरकार ने सत्य कहा है कि अभिलेखों में भारतीयों के जीवन के हर पक्ष की झाँकी प्रस्तुत की गई है। इस संबंध में अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

1. राज्य विस्तार का निर्धारण—विभिन्न अभिलेखों से हमें राजाओं के राज्यविस्तार का ज्ञान होता है। प्राचीन राजा स्तंभ केवल अपने राज्य की सीमा के अंदर ही स्थापित कराते थे। अत: जिन स्थानों पर जिस राजा के अभिलेख मिले हैं, ये उस राजा के राज्य का ही भाग माने जा सकते हैं।

2. राजाओं के नाम—अभिलेखों से अनेक राजाओं के नामों का भी पता चलता है। इन नामों का पता पहले किसी अन्य स्रोतों से पता न चल सका था। अशोक के लिए 'देवनाम् प्रिय' तथा 'प्रियदर्शी' (पियदस्सी) आदि नाम का प्रयोग किया गया, यह अशोक के अभिलेखों से ही ज्ञात होता है।

3. राजाओं के चरित्र की जानकारी—कुछ अभिलेख राजाओं के चरित्र की झाँकी भी प्रस्तुत करते हैं। अशोक के प्रजापालक होने का प्रमाण उनके अभिलेखों से ही मिलता है। ये अभिलेख अशोक को दयावान, परिवार-प्रेमी, तथा पशु-रक्षक सिद्ध करते हैं। इलाहाबाद प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को महान् योद्धा व विद्वान दर्शाया गया है।

4. काल निर्धारण—अभिलेख ऐतिहासिक तिथियों तथा युद्ध काल को निर्धारित करने में अत्यधिक सहयोग करते हैं। समय (काल) का पता अभिलेखों की लिपि और लिखने के तरीके से चलता है।

5. भाषाओं तथा धर्म संबंधी जानकारी—अभिलेखों की भाषा हमें तत्कालीन धर्म की जानकारी उपलब्ध कराती है। प्राचीन काल में संस्कृत भाषा हिन्दू धर्म का प्रतीक समझी जाती थी। इसी प्रकार प्राकृत भाषा बौद्ध धर्म से बंधी हुई थी।

6. ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी—अभिलेखों से अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी भी प्राप्त होती है। समुद्रगुप्त के जीवन की सभी घटनाएँ इलाहाबाद प्रशस्ति से जानी जा सकती हैं। अशोक के शिलालेख से कलिंग युद्ध तथा उसके भयंकर परिणामों का पता चलता है। इसी तरह चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, राजा-भोज, पुलकेशिन द्वितीय आदि अनेक राजाओं के जीवन के उतार-चढ़ाव अभिलेखों के कारण ही प्रकाश में आए है।

7. सामाजिक वर्गों की जानकारी—अभिलेखों द्वारा सामाजिक वर्गों की जानकारी भी प्राप्त होती है। इससे हमें पता चलता है कि उस समय शासक वर्ग के अतिरिक्त धोबी, बुनकर, सुनार, व्यापारी, लौहकार तथा कृषक आदि कई वर्ग थे।

8. भू-व्यवस्था तथा प्रशासन संबंधी जानकारी—कुछ सामंतों, जमींदारों तथा राजाओं द्वारा किए गए भूमिदान के अभिलेख विशेष महत्व के हैं। इनमें प्राचीन भारत की भू-व्यवस्था एवं प्रशासन के विषय में उपयोगी सूचनाएँ भी मिलती हैं। ये अभिलेख ज्यादातर ताम्रपत्रों पर लिखे जाते हैं जो प्राचीनकाल की सभी भाषाओं में लिखे प्राप्त होते हैं। इनमें मंदिरों, अधिकारियों, भिक्षुओं, ब्राह्मणों, विहारों, जागीरदारों आदि को दिए गए गाँवों, जमीनों एवं राजस्व स्रोतों का विवरण मिलता है।

Scanned with CamScanner

9. साहित्यिक स्तर की जानकारी—अभिलेखों की भाषाओं से उस काल के साहित्यिक स्तर की जानकारी प्राप्त होती है। हमें यह जानकारी भी प्राप्त होती है कि देश किस भाग में संस्कृत, तमिल, प्राकृत, पाली, तेलगू आदि भाषाएँ प्रचलन में थीं तथा उनका स्तर कैसा था।

10. कला के प्रति प्रेम की जानकारी—अभिलेख, गुफाओं तथा शिलाओं को तराशने व सँवारने के बाद स्वरूप लेते हैं। इन्हें खोदकर बनाया जाता है। इनसे तत्कालीन कला के प्रति प्रेम का अद्भुत परिचय भी मिलता है। अशोक के अभिलेख मौर्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

प्रश्न 5. उत्तर मौर्य काल में विकसित राजस्व के विचारों की चर्चा कीजिए। (NCERT)

उत्तर—उत्तर मौर्य काल राजस्व के जिन विचारों का विकास हुआ उनकी प्रमुख विशेषता थी—राजा का दैविक स्वरूप। राजा उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए स्वयं को देवी-देवताओं के साथ जोड़ने लगे। मध्य एशिया से लेकर पश्चिमोत्तर भारत तक शासन करने वाले कुषाण शासकों ने (लगभग प्रथम शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी ई. तक) इस तरीके का प्रयोग किया। कुषाण इतिहास की रचना अभिलेखों तथा साहित्य परंपरा के माध्यम से की गई है। जिस प्रकार के राजधर्म (राजस्व) को कुषाण शासकों ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उसका सर्वोत्तम प्रमाण उनके सिक्कों और मूर्तियों से प्राप्त होता है।

1. कुषाण शासक—(i) उत्तर प्रदेश में मथुरा के पास स्थित माट के एक देवस्थान पर कुषाण शासकों की विशालकाय, मूर्तियाँ मिली हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इन मूर्तियों के माध्यम से कुषाण स्वयं को देव-तुल्य दिखाना चाहते थे। कुछ कुषाण शासकों ने अपने नाम के आगे 'देवपुत्र' की उपाधि धारण कर ली थी। ये संभवतः उन चीनी शासकों से प्रेरित हुए होंगे, जो स्वयं को 'स्वर्गपुत्र' कहते थे।

(ii) कुषाण शासकों के सिक्कों पर एक राजा की प्रतिमा एक ओर तथा सिक्के के दूसरी ओर एक देवता का चित्र दर्शाया गया है। यह सिक्के कुषाणों को देव-तुल्य साबित करने हेतु जारी किए गए थे।

2. गुप्त शासक—(i) गुप्तकाल में राजस्व के विचारों का दूसरा विकास आरंभ हुआ। चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य सहित बहुत से बड़े साम्राज्यों के साक्ष्य मिलते हैं। इनमें से कई साम्राज्य सामंतों पर निर्भर थे। ये सामंत अपना निर्वाह स्थानीय संसाधनों द्वारा करते थे। सामंत अपने शासकों का सम्मान करते थे तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सैनिक सहायता भी देते थे। कुछ शक्तिशाली सामंत राजा भी बन जाते थे।

(ii) गुप्त शासकों के इतिहास के निर्माण में साहित्य, अभिलेखों और सिक्कों की सहायता ली गयी है। साथ ही कवियों द्वारा अपने राजा या स्वामी की प्रशंसा में लिखी गई प्रशस्तियों का सहारा भी लिया गया है। इतिहासकार इन प्रशस्तियों के आधार पर ऐतिहासिक तथ्य निकालने का प्रयास करते हैं परंतु इनमें राजाओं की बढ़-चढ़कर प्रशंसा की गई है जिससे ऐतिहासिक तथ्य दबकर रह गए हैं। उदाहरण—इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति। इसके लेखक हरिषेण ने समुद्रगुप्त को बहुत ही शक्तिशाली सम्राट बताया है। वे लिखते हैं—

धरती पर उनका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। अनेक गुणों तथा शुभकार्यों से सम्पन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया था। वे परमात्मा पुरुष हैं। इस प्रशंसा के पीछे राजस्व के नए विचार हो झलकते हैं।

प्रश्न 6. वर्णित काल में कृषि के तौर-तरीकों में किस हद तक परिवर्तन हुए ? (NCERT)

उत्तर—600 ई. पू. से 600 ई. के दौरान राजाओं द्वारा करों की माँग बढ़ने लगी थी। करों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए किसान उपज बढ़ाने हेतु उपाय तलाशने लगे। इसके परिणामस्वरूप कृषि के कार्यकलापों में परिवर्तन आने लगे।

1. हल का प्रचलन—कृषि उपज बढ़ाने का एक प्रमुख तरीका हल का प्रचलन था। हल का प्रयोग छठी शताब्दी ई.पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में होने लगा था। अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हलों द्वारा उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। इसके अतिरिक्त गंगा की घाटी में धान की रोपाई से भी उपज में बहुत वृद्धि होने लगी। इसके लिए किसानों को बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

2. कृत्रिम सिंचाई—उपज बढ़ाने का एक और तरीका कृत्रिम सिंचाई का प्रयोग था। सिंचाई के लिए कुओं, तालाबों, और नहरों के पानी का प्रयोग किया जाने लगा। इनका विकास लोगों ने व्यक्तिगत रूप से भी किया और कृषक समुदायों ने आपस में मिलकर भी किया। इस तालाब, कुएँ, नहरें और सिंचाई साधन आदि प्रयोग करने वाले लोग प्रायः राजा अथवा प्रभावशाली लोग थे।

Scanned with CamScanner

3. कुदाल का उपयोग—यद्यपि लोहे के फाल वाले हल के प्रयोग से फसलों की उपज बढ़ने लगी, तो भी ऐसे हलों का उपयोग उपमहाद्वीप के कुछ ही भाग तक सीमित था। पंजाब तथा राजस्थान के अर्ध-शुष्क प्रदेशों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग 20 वीं शताब्दी में शुरू हुआ। जो किसान उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर व मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहते थे, उन्होंने खेती के लिए कुदाल का उपयोग किया। कुदाल ऐसे इलाकों के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।

कृषि के नए तौर-तरीकों का प्रभाव—खेती की इन नयी तकनीकों से उपज तो बढ़ी, परंतु इसके कारण खेती से जुड़े लोगों में भेद बढ़ने लगे। बौद्ध कथाओं में भूमिहीन खेतिहर श्रमिकों, छोटे किसानों और बड़े-बड़े जमींदारों का उल्लेख मिलता है। जो किसानों की विभिन्न सामाजिक स्थितियों को दर्शाता है। पाली भाषा में छोटे किसानों व जमींदारों के लिए 'गृहपति' शब्द का प्रयोग किया जाता था। बड़े-बड़े जमींदार व ग्राम के प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे। वे प्राय: किसानों पर नियंत्रण रखते थे। ग्राम-प्रधान का पद प्राय: वंशानुगत होता था। प्रारंभिक तमिल संगम साहित्य में भी गाँवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख मिलता है, जैसे—वेल्लाल या बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्वर व दास अणिमई। यह भी संभव है कि इन विभिन्नताओं का आधार भूमि का स्वामित्व, नयी प्रौद्योगिकी तथा श्रम का उपयोग रहा हो। ऐसी परिस्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था।

तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. एक इतिहासकार के रूप में आप कैसे ज्ञात करेंगे कि अभिलेखों पर क्या लिखा है ?

उत्तर—एक इतिहासकार के रूप में अभिलेखों के अध्ययन हेतु मुझे मुद्राशास्त्र के अंतर्गत प्राचीन सिक्कों का विस्तृत अध्ययन करना होगा, सिक्के पर अंकित लिपि, काल, भाषा का ज्ञान प्राप्त करना होगा। उस काल में प्रयुक्त लिपि जैसे ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि, अरेमाईक लिपि का अध्ययन करना होगा। ब्राह्मी लिपि के अक्षर का उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर से समानता या भिन्नता का मिलान करना होगा।

यूनानी एवं खरोष्ठी लिपि के अध्ययन हेतु यूनानी भाषा पढ़ने तथा कुछ यूरोपियन भाषाओं की जानकारी का होना भी आवश्यक होगा। अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य को कालक्रम एवं संबंधित शासकों से जोड़कर प्रमाणिकता के आधार पर प्रस्तुत करना होगा। कई अभिलेखों में शासक अशोक का नाम नहीं लिखा है, उसमें अशोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है, जैसे "देवानांपिय" अर्थात् देवों का प्रिय और "पियदस्सी" यानी देखने में सुंदर, परंतु कुछ अभिलेखों में अशोक का नाम मिलता है। परीक्षण के बाद विषय, भाषा-शैली एवं पुरालिपि में समानता के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि इन अभिलेखों को एक ही शासक ने बनवाया है।

●●

अध्याय 2

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग—आरंभिक समाज

(लगभग 600 ई.पू. से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. प्राचीनकाल में अधिकतर राजवंश किस प्रणाली का अनुसरण करते थे—
   (a) मातृवंशिकता का (b) पितृवंशिकता का
   (c) भ्रातृवंशिकता का (d) आनुवंशिकता का।
2. महाभारत में श्लोकों की संख्या है—
   (a) 20 हजार (b) 50 हजार (c) एक लाख से अधिक (d) एक लाख।
3. जाति-व्यवस्था में पहला दर्जा प्राप्त था—
   (a) वैश्यों को (b) क्षत्रियों को (c) शूद्रों को (d) ब्राह्मणों को।

Scanned with CamScanner

तार्किक एवं समझ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों का उचित सम्मान था, इस संबंध में अपने साक्ष्य प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—हम पूरे प्रमाणिकता के साथ कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को सम्मानीय स्थान प्राप्त था। प्राचीन धर्मग्रंथ ऋग्वेद में स्त्रियों के सम्मान में कई ऋचाओं का निर्माण किया गया है, ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का निर्माण महिलाओं के द्वारा किया गया है, उस काल की प्रमुख विदुषी नारियों में लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला, गार्गी का नाम आता है जिन्होंने अपनी विद्वता से ऋषियों को भी प्रभावित किया था। प्राचीन धर्मग्रंथ, रामायण, महाभारत पुराणों में भी स्त्रियों के सम्मान में अनेक उदाहरण मिलते हैं। रामायण में सीता का त्याग, महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण, कुन्ती का पुत्रों द्वारा सम्मान, गाँधारी का शासन कार्यों में हस्तक्षेप बताता है कि प्राचीन भारत में स्त्रियों का उचित स्थान एवं सम्मान था। धार्मिक कार्यों में पुरुषों के साथ समान रूप से भाग लेने एवं संपत्ति में भी स्त्रियों को उचित अधिकार दिया गया था। इस प्रकार अनेक प्रमाण हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीनकाल में स्त्रियों का उचित सम्मान था। ●●

अध्याय 3

विचारक, विश्वास और इमारतें—सांस्कृतिक विकास

(लगभग 600 ईसा पूर्व से ईसा संवत् 600 तक)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. सबसे विशाल तथा शानदार बौद्ध स्तूप था—
   (a) भूमरा का (b) अमरावती का
   (c) साँची का (d) शाहजी की ढेरी का।
2. स्तूप का संस्कृत अर्थ है—
   (a) टीला (b) प्रांगण (c) शिखर (d) मेहराब।
3. साँची का स्तूप महत्वपूर्ण केन्द्र था—
   (a) बौद्ध धर्म का (b) हिन्दू धर्म का
   (c) इस्लाम धर्म का (d) जैन धर्म का।
4. साँची के स्तूप के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान रहा—
   (a) नूरजहाँ का (b) जहाँआरा बेगम का
   (c) शाहजहाँ बेगम का (d) सुल्तानजहाँ बेगम का।
5. भगवान बुद्ध के बचपन का नाम था—
   (a) सिद्धार्थ (b) राहुल (c) वर्धमान (d) शाक्य।
6. जहाँ बुद्ध ने निब्बान (निर्वाण) प्राप्त किया था—
   (a) लुंबिनी (b) सारनाथ (c) बोधगया (d) कुशीनगर।
7. स्तूप से संबंधित संरचना नहीं है—
   (a) गर्भगृह (b) हर्मिक (c) यष्टि (d) अंड।

उत्तर—1. (b) 2. (a), 3. (a), 4. (c), 5. (a), 6. (d), 7. (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. बौद्धों के धार्मिक संगठन को ..... के नाम से जाना जाता है।
2. गौतम बुद्ध का जन्म ..... ई.पू. में ..... ग्राम में हुआ था।

Scanned with CamScanner

3. बुद्धकालीन भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रों में ..... व्यवस्था थी।
4. बौद्ध संघ की संचालन पद्धति ..... तथा ..... की परंपरा पर आधारित थी।

उत्तर—1. संघ, 2. 566, लुम्बिनी, 3. गणतंत्रीय, 4. गणों, संघों।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. बुद्ध का जन्म	(a) कुशीनगर
2. बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रहण	(b) सारनाथ
3. बुद्ध की ज्ञानप्राप्ति	(c) बोधगया
4. बुद्ध के प्रथम उपदेश का स्थान	(d) त्रिपिटक
5. बुद्ध का महापरिनिर्वाण	(e) लुंबिनी।

उत्तर—1. (e), 2. (d), 3. (c), 4. (b), 5. (a).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. साँची बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।
2. ऋग्वेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति सूक्तों का संग्रह है।
3. महायान और हीनयान जैन धर्म से संबंधित परंपराएँ हैं।
4. अमरावती के स्तूपों की खोज सन् 1818 में हुई।
5. हिन्दू धर्म में शैव तथा वैष्णव दो परंपराएँ सम्मिलित थीं।
6. भगवान बुद्ध का जन्म कुशीनगर में हुआ था।

उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. असत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. सबसे विशाल तथा शानदार बौद्ध स्तूप कहाँ का था ?
2. स्तूप का संस्कृत अर्थ क्या है ?
3. साँची का स्तूप किसका महत्वपूर्ण केन्द्र था ?
4. साँची के स्तूप के संरक्षण में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा।
5. भगवान बुद्ध के बचपन का नाम क्या था ?
6. बुद्ध ने निब्बान (निर्वाण) कहाँ प्राप्त किया था ?
7. बौद्धों के धार्मिक संगठन को किसके नाम से जाना जाता है ?
8. गौतम बुद्ध का जन्म किस सन् में एवं कहाँ हुआ था ?
9. बुद्धकालीन भारत में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ क्षेत्रों में कौन-सी व्यवस्था थी ?
10. बौद्ध संघ की संचालन पद्धति किस परंपरा पर आधारित थी ?
11. महाकाव्य काल का दूसरा नाम क्या है ?
12. रामायण के रचयिता कौन थे ?
13. वेद व्यास ने किस महाकाव्य की रचना की थी ?
14. साहित्यिक दृष्टि से महाभारत का प्रथम संस्करण क्या कहलाता है ?
15. पुराणों की संख्या कितनी है ?
16. श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध हेतु उत्साहित करते हुए जो उपदेश दिए हैं वे किसमें संकलित हैं ?
17. महाभारत में कुल कितने खंड हैं ?
18. वैदिक मंत्रों व सूक्तों के संग्रह को क्या कहते हैं ?
19. सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार किसने करवाया था ?
20. उपनिषदों की कुल संख्या कितनी है ?

Scanned with CamScanner

21. दक्कन और मध्य भारत में मौर्यों के उत्तराधिकारी कौन थे ?
22. शौर्य, युद्ध तथा वर्षा के प्रमुख देवता कौन थे ?

उत्तर—1. अमरावती का, 2. टीला, 3. बौद्ध धर्म का, 4. शाहजहाँ बेगम का, 5. सिद्धार्थ, 6. कुशीनगर, 7. संघ, 8. 566ई. पू., लुम्बिनी, 9. गणतंत्रीय, 10. गणों, संघों, 11. वीरकाल, 12. महर्षि वाल्मीकि, 13. महाभारत को, 14. आदि पुराण, 15. 18, 16. श्रीमद्भगवद्गीता में, 17. 18, 18. संहिता, 19. राजा रुद्रदामन ने, 20. 108, 21. सातवाहन, 22. इन्द्र।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. स्तूप शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर—स्तूप बौद्ध धर्म से जुड़े पवित्र टीले हैं। महात्मा बुद्ध की अस्थियों पर अर्द्ध-गोलाकार रूप में बने भवनों को स्तूप के नाम से जाना जाता है। इनमें बुद्ध के शरीर के कुछ अवशेष अथवा उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तु को गाड़ दिया गया था। साँची और अमरावती के स्तूप विश्व में प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 2. 19 वीं शताब्दी में यूरोपवासियों को स्तूप में क्यों दिलचस्पी थी ? कोई दो कारण संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—यूरोपवासियों को स्तूपों की सुन्दर तथा आकर्षक मूर्तियों के कारण स्तूपों में दिलचस्पी थी। वे इन्हें अपने साथ यूरोप ले जाना चाहते थे।

प्रश्न 3. पूर्व वैदिक काल में वर्णित प्रमुख तीन देवताओं के नाम लिखिए।

उत्तर—पूर्व वैदिक काल में वर्णित प्रमुख तीन देवताओं के नाम हैं—(1) अग्नि, (2) इंद्र, (3) सोम।

प्रश्न 4. बुद्ध के जीवन से जुड़े चार ऐसे स्थानों के नाम लिखिए जहाँ चैत्य बने।

उत्तर—1. लुंबिनी—जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।
2. बोधगया—जहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।
3. सारनाथ—जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था।
4. कुशीनगर—जहाँ बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था।

प्रश्न 5. बुद्धचरितम् की रचना किसने की थी ? यह महत्वपूर्ण क्यों था ?

उत्तर—बुद्धचरितम् पुस्तक को महाकवि अश्वघोष ने रचा। यह ग्रंथ गौतम बुद्ध के जीवन चरित्र के विषय में बहुत सारी जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं।

प्रश्न 6. साँची से प्राप्त कमलदल तथा हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति के विषय में इतिहासकारों में क्या मतभेद हैं ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—कुछ इतिहासकार इस महिला को बुद्ध की माँ माया बताते हैं तो कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार यह एक लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी है। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली एक देवी मानी जाती थी जिन्हें प्रायः हाथियों के साथ जोड़ा जाता था।

प्रश्न 7. 'निर्वाण' शब्द का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—बौद्ध धर्म में निर्वाण शब्द का अर्थ है—मुक्ति पाना अथवा मोक्ष या जीवन-मरण के बंधनों से छुटकारा पाना। बौद्ध धर्म में मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करना जीवन का मुख्य उद्देश्य माना जाता है।

प्रश्न 8. 'धम्म' या 'धर्म' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर—'धम्म' या 'धर्म' एक ही शब्द के पर्यायवाची हैं। धर्म आर्यों के लिए जो अर्थ रखता था, वही धम्म का अर्थ बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए है अर्थात् पूजा पाठ करना, मूर्तियों पर जल चढ़ाना, हवन-स्तुति करना, किसी जीव को कष्ट न पहुँचाना, सबकी भलाई करना।

प्रश्न 9. तीर्थंकर का क्या अर्थ है ?

उत्तर—महावीर से पूर्व जैन धर्म के जो 23 धर्म गुरु हुए थे, उन्हें तीर्थंकर के नाम से जाना जाता है। महावीर जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 10. 'चैत्य' क्या है ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—शवदाह के पश्चात् बौद्धों के शरीर के कुछ अवशेष टीलों पर सुरक्षित रख दिए जाते थे। अंतिम संस्कार से जुड़े इन टीलों को चैत्य कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 11. 'विहार' से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—बौद्ध मठों को विहार कहा जाता था। विहारों में बौद्ध भिक्षु वर्षा ऋतु में रहते थे। नासिक (महाराष्ट्र राज्य) में ऐसे तीन विहार मिले हैं।

प्रश्न 12. उन देशों एवं क्षेत्रों के नाम लिखिए जहाँ बुद्ध के संदेश का प्रसार हुआ।

उत्तर—बुद्ध का संदेश भारत से भूटान, वर्तमान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कोरिया, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड, चीन और इण्डोनेशिया आदि में फैला।

प्रश्न 13. साँची के स्तूप की खोज कब हुई ? उस समय इसके तोरणद्वार किस हालत में थे ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—साँची के स्तूप की खोज 1818 ई. में हुई। इसके चार तोरणद्वार थे। इनमें से तीन तोरणद्वार ठीक हालत में खड़े थे जबकि चौथा तोरणद्वार वहीं पर गिरा हुआ था।

प्रश्न 14. 'भक्ति' किसे कहते हैं ?

उत्तर—भक्ति एक प्रकार की आराधना है। इसमें उपासना तथा ईश्वर के बीच के रिश्ते को प्रेम तथा समर्पण का रिश्ता माना जाता है।

प्रश्न 15. दो जटिल यज्ञों के नाम लिखिए। इन्हें कौन करते थे और क्यों ?

उत्तर—राजसूय तथा अश्वमेघ जटिल यज्ञ थे। इनके अनुष्ठान हेतु बहुत से ब्राह्मण व पुरोहितों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसलिए इन्हें केवल राजा तथा बड़े-बड़े सरदार ही कराते थे।

प्रश्न 16. बुद्ध के अष्ट मार्ग अथवा मध्य मार्ग में कौन-सी आठ बातें शामिल थीं ?

उत्तर—बुद्ध के अष्ट (मध्य) मार्ग में शामिल आठ बातें निम्नलिखित थीं—

(1) शुद्ध दृष्टि, (2) शुद्ध संकल्प, (3) शुद्ध वचन, (4) शुद्ध कर्म, (5) शुद्ध कमाई, (6) शुद्ध प्रयत्न, (7) शुद्ध स्मृति, (8) शुद्ध समाधि।

ये सभी सिद्धांत एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

प्रश्न 17. महावीर कौन थे ?

उत्तर—महावीर अपने युग के महान् चिंतक थे। वे जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर थे।

प्रश्न 18. जैन साधु तथा साध्वियाँ कौन-से पाँच व्रत करते थे ?

उत्तर—जैन साधु तथा साध्वियाँ निम्न पाँच व्रत करते थे—

(1) हत्या न करना, (2) चोरी न करना, (3) झूठ न बोलना, (4) धन इकट्ठा न करना, (5) ब्रह्मचर्य का पालन करना।

प्रश्न 19. जातकों की विषय-वस्तु का उल्लेख कीजिए। वे क्या दर्शाते हैं ?

उत्तर—जातकों में जानवरों की अनेक कहानियाँ दी गई हैं। इन्हें मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। जातक वास्तव में महात्मा बुद्ध के पूर्व-जन्म (बोधिसत्वों) की कहानियाँ हैं।

प्रश्न 20. 'संघ' नामक पद का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बौद्धों के धार्मिक संगठन को 'संघ' के नाम से जाना जाता है। बौद्ध संघों में भिक्षु और भिक्षुणियाँ दोनों रहते थे, परंतु उन्हें आचरण में शुद्धता लानी पड़ती थी। उन्हें विलासमय जीवन से दूर रहना पड़ता था और आजीवन विवाह नहीं करना होता था।

प्रश्न 21. 'जिन' शब्द से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—जैन पौराणिक गाथाओं में 'जिन' शब्द का अर्थ है—महान् विजयी। महावीर स्वामी को 'जिन' का नाम दिया गया है, क्योंकि उन्होंने सुख और दुःख पर विजय प्राप्त कर लिया था।

प्रश्न 22. किसने बुद्ध को संघ में महिलाओं के प्रवेश हेतु राजी किया तथा पहली बनी भिक्षुणी का नाम लिखिए।

उत्तर—बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने बुद्ध को समझाकर महिलाओं के संघ में आने की अनुमति प्राप्त की।

बुद्ध की उपमाता, महाप्रजापति, गौतमी संघ में आने वाली पहली भिक्षुणी बनीं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 23. मिलिन्दपन्हो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—यह बौद्ध ग्रंथ में बैक्ट्रियन और भारत के उत्तर पश्चिमी भाग पर शासन करने वाले हिन्दू यूनानी सम्राट मैनेण्डर एवं प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु नागसेन के संवाद का वर्णन दिया गया है। इसमें ईसा की पहली दो शताब्दियों के उत्तर-पश्चिम भारतीय जीवन की झलक देखने को मिलती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अमरावती की खोज शायद साँची से थोड़े पहले हो गई थी। तब तक विद्वान इस बात के महत्व को नहीं समझ पाए थे कि किसी पुरातात्विक अवशेष को उठाकर ले जाने की बजाय खोज की जगह पर ही संरक्षित करना अधिक महत्वपूर्ण था। 1818 में जब साँची की खोज हुई, इसके तीन तोरणद्वार तब भी खड़े थे। और चौथा वहीं पर गिरा हुआ था व टीला भी अच्छी हालत में था। तब भी यह सुझाव आया कि तोरणद्वारों को पेरिस या लंदन भेज दिया जाये। अंततः कई कारणों से साँची का स्तूप वहीं बना रहा। इसलिए यह आज भी बना हुआ है जबकि अमरावती का महाचैत्य अब सिर्फ एक छोटा-सा टीला है जिसका सारा गौरव नष्ट हो चुका है।

प्रश्न 2. बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की शिक्षाओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की शिक्षाओं में निम्नलिखित अंतर देखने को मिलता है, जो इस प्रकार है—

बौद्ध धर्म	जैन धर्म
1. बौद्ध धर्म ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मौन है।	1. जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व को बिल्कुल नहीं मानता।
2. पूजा-पाठ, भजन कीर्तन, कर्म के समक्ष व्यर्थ है।	2. प्रार्थना कुछ भी नहीं है, तप और व्रत ही मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं।
3. मोक्ष प्राप्ति हेतु अच्छे कर्म और पवित्र जीवन पर बल देता है।	3. मोक्ष प्राप्ति के लिए त्रिरत्न पर बल देता है— (i) सम्यक् ज्ञान, (ii) सम्यक् कर्म तथा (iii)अहिंसा।
4. बौद्ध धर्म का विस्तार देश-विदेश दोनों स्थानों पर हुआ। एशिया के कई देश इसकी छाया में आ गये थे।	4. जैन धर्म केवल भारत में ही पनपा, विदेशों में नहीं।
5. अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। यज्ञ आदि में इनका विश्वास नहीं है।	5. ये अहिंसा पर अत्यधिक बल देते हैं तथा जड़ पदार्थों में जीवन का आभास करते हैं।
6 संघ को धर्म का प्रचार माध्यम बनाता है, मठों में अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता है।	6. इनके संघ नहीं होते, परंतु धर्म के प्रचार के लिए प्रचारक होते हैं।

प्रश्न 3. साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूपों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर—साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं। इनमें केवल पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार ही बने हैं। पत्थर की ये वेदिकाएँ किसी बाँस या काठ के घेरे के समान थीं परंतु चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी। उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं ओर रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे। ऐसा लगता था जैसे वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों। बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

प्रश्न 4. महात्मा बुद्ध अथवा बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर—महात्मा बुद्ध अथवा बौद्ध धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है। यह लगातार बदल रहा है। यह आत्मविहीन (आत्मा) है क्योंकि यहाँ कुछ भी स्थायी अथवा शाश्वत् नहीं है। (2) इस क्षणभंगुर संसार में दुःख मनुष्य के जीवन को जकड़े हुए है। घोर तपस्या व विषयाशक्ति के बीच मध्यम मार्ग अपनाकर मनुष्य संसार के दुःखों से मुक्ति पा सकता है। (3) बौद्ध धर्म की प्रारंभिक परंपराओं में भगवान का होना या न होना अप्रासंगिक था। (4) बुद्ध का मानना था कि समाज का निर्माण मनुष्यों ने किया था न कि ईश्वर ने। इसलिए उन्होंने राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान बनने की सलाह दी। (5) बुद्ध के अनुसार व्यक्तिगत प्रयास से सामाजिक परिवेश को बदला जा

Scanned with CamScanner

सकता है। (6) बुद्ध ने जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्म-ज्ञान और निर्वाण के लिए सम्यक् कर्म पर बल दिया। (7) बौद्ध परंपरा के अनुसार अपने शिष्यों के लिए बुद्ध का अंतिम निर्देश यह था, "तुम सब अपने लिए स्वयं ही ज्योति बनो क्योंकि तुम्हें स्वयं ही अपनी मुक्ति का मार्ग ढूँढना है।"

प्रश्न 5. सुत्तपिटक ने बौद्ध धर्म (दर्शन) की पुनर्रचना किस प्रकार की है ?

उत्तर—सुत्तपिटक बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। भगवान बुद्ध की शिक्षाओं अथवा बौद्ध दर्शन को सुत्तपिटक में दी गई कहानियों के आधार पर पुनर्निर्मित किया गया है। हालाँकि कुछ कहानियों में उनकी अलौकिक शक्तियों का उल्लेख है, जो भी दूसरी कथाएँ दिखाती हैं कि अलौकिक शक्तियों के स्थान पर बुद्ध ने लोगों को विवेक एवं तर्क के आधार पर समझाने का प्रयास किया। उदाहरण—जब एक मृत बालक की शोक संतप्त माँ बुद्ध के पास आई तो उन्होंने बालक को जीवित करने की अपेक्षा उस महिला को मृत्यु के अवश्यंभावी होने की बात समझाई।

प्रश्न 6. बौद्ध त्रिपिटक के विषय में संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर—महात्मा बुद्ध लोगों को बातचीत और चर्चा करते हुए मौखिक रूप में शिक्षा देते थे। लोग इन प्रवचनों को सुनकर उन पर चर्चा अथवा बातचीत करते थे। बुद्ध के जीवनकाल में उनके किसी भी संभाषण को लिखा नहीं गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों ने सबसे वरिष्ठ श्रमणों की एक सभा वेसली अथवा वैशाली में बुलाई। वहाँ पर उनकी शिक्षाओं का संकलन किया गया। इन संग्रहों को 'त्रिपिटक' ग्रंथों को रखने के लिए 'तीन टोकरियाँ' कहा जाता था। इन टोकरियों अथवा त्रिपिटकों के नाम हैं—विनय पिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्म पिटक। इन्हें पहले मौखिक रूप से ही प्रचारित किया गया था, परंतु बाद में लिखकर विषय और लंबाई के अनुसार वर्गीकरण कर दिया गया।

विनय-पिटक संघ या बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह है। सुत्त-पिटक में बुद्ध की शिक्षाएँ रखी गईं। उनके दर्शन से जुड़े विषय अभिधम्म पिटक में शामिल हैं। हर पिटक के अंदर कई ग्रंथ होते थे। आगे चलकर बौद्ध विद्वानों ने इन ग्रंथों पर टीकाएँ लिखीं।

प्रश्न 7. गौतम बुद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—गौतम बुद्ध का जन्म 566 ई. पू. में कपिलवस्तु में हुआ। उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था। गौतम बुद्ध के जन्म के कुछ ही दिनों पश्चात् उनकी माता का देहांत हो गया। उनके पिता ने गौतम के लिए एक सुन्दर महल बनवाया, परंतु महल की चारदीवारी में गौतम का दिल बहल न सका। अत: उनके पिता ने उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा के साथ कर दिया। उनका एक पुत्र हुआ, परंतु फिर भी वे दु:खी रहने लगे। कुछ समय पश्चात् गौतम ने रोग, बुढ़ापा, मृत्यु आदि के दृश्य देखे। उन्होंने इन दुखों का कारण जानने हेतु अपना घर-बार त्याग दिया। उन्होंने छ: वर्ष तक घोर तपस्या भी की। अंत में वे 'गया' के समीप एक वट वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर बैठ गए। चालीस दिन के बाद उन्हें सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ और वे 'बुद्ध' कहलाए। बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश बनारस के समीप सारनाथ में दिया। यहाँ पाँच अन्य व्यक्ति उनके शिष्य बने। बाद में इनके शिष्यों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली गयीं। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (देवरिया जिला) नामक स्थान पर उन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

प्रश्न 8. "बुद्ध के जीवनकाल में तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् भी बौद्ध धर्म तेजी से फैला।" इस कथन का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बुद्ध के बौद्ध धर्म के तेजी से फैलने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(1) लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे। वे उस युग में तेजी से हो रहे सामाजिक बदलावों के कारण उलझन में थे। (2) बौद्ध धर्म में जन्म के आधार पर श्रेष्ठता की अपेक्षा अच्छे आचरण व मूल्यों को महत्व दिया जाता था। इस बात से लोग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए। (3) बौद्ध धर्म के छोटे व कमजोर लोगों के प्रति मित्रता एवं करुणा के भाव ने भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। (4) बुद्ध संघ में महिलाओं के प्रवेश से बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। (5) बुद्ध अपने युग के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक थे। सैकड़ों वर्षों के दौरान उनके संदेशों को पूरे उपमहाद्वीप में और उसके बाद मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया, जापान, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया तक फैल गए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. क्या उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से भिन्न थे? अपने जवाब के पक्ष में तर्क दीजिए। (NCERT)

उत्तर—हाँ, उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों तथा भौतिकवादियों से भिन्न थे। इनकी भिन्नता का प्रमुख आधार निम्नलिखित है—

नियतिवादियों तथा भौतिकवादियों के विचार—नियतिवादी मानते थे कि मनुष्य के सुख-दुःख निर्धारित मात्रा में दिए गए हैं। इन्हें संसार में बदला नहीं जा सकता है। बुद्धिमान सोचते हैं कि वे सद्गुणों व तपस्या द्वारा अपने कर्मों से मुक्ति प्राप्त कर लेगा। परंतु यह संभव नहीं है कि मनुष्य को अपने सुख-दुःख भोगने ही पड़ते हैं।

इसी प्रकार भौतिकवादी मानते हैं कि संसार में दान, यज्ञ या चढ़ावा जैसी कोई वस्तु नहीं है। दान देने का सिद्धांत झूठा और खोखला है। मृत्यु के बाद तो कुछ बचता ही नहीं है। मूर्ख हो या विद्वान दोनों ही कटकर नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य जिन चार तत्वों से बना है वे संसार के उन्हीं तत्वों में मिल जाता है।

उपनिषदों के दार्शनिक विचार—यहाँ दिए गए विचारों में 'आत्मा' तथा 'परमात्मा' का कोई स्थान नहीं है। इसके विपरीत उपनिषदों के अनुसार मानव-जीवन का लक्ष्य 'आत्मा' को 'परमात्मा' (परम ब्रह्म) में विलीन कर स्वयं परम ब्रह्म हो जाना है।

प्रश्न 10. जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को संक्षेप में लिखिए। (NCERT)

उत्तर—जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा यह है कि सारा संसार सजीव है तथा यह माना जाता है कि पत्थर, चट्टान व जल में भी जीवन होता है। (2) जैन साधु और साध्वी पाँच व्रत करते थे—(i) हत्या न करना, (ii) चोरी न करना, (iii) झूठ न बोलना, (iv) ब्रह्मचर्य का पालन करना, तथा (v) धन संग्रह न करना। (3) जीवों के प्रति अहिंसा विशेषकर मनुष्यों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े-मकोड़ों को न मारना जैन दर्शन का केन्द्र बिंदु है। जैन मत के अहिंसा के इस सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन को प्रभावित किया है। (4) जैन धर्म अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है। इस चक्र से मुक्ति पाने के लिए त्याग और तपस्या की आवश्यकता होती है। यह संसार के त्याग से ही संभव हो पाता है। इसलिए मुक्ति के लिए मनुष्य को संसार का त्याग करके विहारों में निवास करना चाहिए।

प्रश्न 11. साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए। (NCERT)

उत्तर—साँची के स्तूप के अवशेषों के संरक्षण में भोपाल की बेगमों का निम्नलिखित योगदान रहा—

(1) पहले फ्रांसीसियों ने और बाद में अंग्रेजों ने साँची के पूर्वी तोरणद्वार को अपने-अपने देश में ले जाने की कोशिश की। परंतु भोपाल की बेगमों ने उन्हें स्तूप की प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट कर दिया। (2) शाहजहाँ बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रख-रखाव के लिए धन का अनुदान दिया। (3) साँची का स्तूप बौद्ध धर्म का सबसे अधिक महत्वपूर्ण केन्द्र है। इसने आरंभिक बौद्ध धर्म को समझने में बहुत सहायता की है। (4) सुल्तान जहाँ बेगम ने वहाँ एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया। (5) बेगमों द्वारा समय पर लिए गए विवेकपूर्ण निर्णय ने साँची के स्तूप को उजड़ने से बचा लिया। यदि ऐसा न होता तो इसकी दशा भी अमरावती के स्तूप जैसी होती। (6) जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ सुल्तानजहाँ को समर्पित किए। इनके प्रकाशन पर बेगमों ने धन लगाया।

प्रश्न 12. निम्नलिखित संक्षिप्त अभिलेख को पढ़िए और जवाब दीजिए—

महाराज हुविष्क (एक कुषाण शासक) के तैंतीसवें साल में गर्म मौसम के पहले महीने के आठवें दिन त्रिपिटक जानने वाले भिक्षु बल की शिष्या, त्रिपिटक जानने वाली बुद्धमिता के बहन की बेटी भिक्षुणी धनवती ने अपने माता-पिता के साथ मधुवनक में बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

(1) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कैसे निश्चित की? (2) आपके अनुसार उन्होंने बोधिसत्त की मूर्ति क्यों स्थापित की? (3) वे अपने किन रिश्तेदारों का नाम लेती हैं? (4) वे कौन से बौद्ध ग्रंथों को जानती थीं? (5) उन्होंने ये पाठ किससे सीखे थे? (NCERT)

Scanned with CamScanner

उत्तर—(1) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कुषाण शासक महाराज हुविष्क के शासनकाल की सहायता से निश्चित की। यह तारीख हुविष्क के शासनकाल के तैंतीसवें साल की गर्मियों के पहले महीने का आठवाँ दिन (8 तारीख) है। (2) धनवती एक भिक्षुणी थीं। उनकी बोधिसत्ता में अगाध श्रद्धा थी। इसी कारण उन्होंने बोधिसत्ता की मूर्ति स्थापित करवाई। (3) वे अपनी मौसी बुद्धिमता तथा अपने माता-पिता का नाम लेती है। (4) वे त्रिपिटक नामक बौद्ध ग्रंथ को जानती थीं। (5) उन्होंने ये पाठ अपने गुरु तथा भिक्षु 'बल' से सीखे थे। यह भी संभव है कि उन्होंने कुछ पाठ अपनी मौसी बुद्धिमता से सीखी हो जो त्रिपिटक ग्रंथों को जानती थीं।

प्रश्न 13. आपके अनुसार स्त्री-पुरुष संघ में क्यों जाते थे ? **(NCERT)**

उत्तर—स्त्री-पुरुष संभवत: निम्नलिखित बातों के कारण संघ में जाते थे—

(1) संघ में सभी का दर्जा समान था, क्योंकि भिक्षु अथवा भिक्षुणी बन जाने के बाद सभी को अपनी पुरानी पहचान का त्याग करना पड़ता था। (2) संघ का जीवन सादा, सरल तथा अनुशासित था। (3) संघ में कुछ लोग धम्म के शिक्षक (उपदेशक) बनना चाहते थे। (4) वे सांसारिक विषयों से दूर रहना चाहते थे। (5) वहाँ वे बौद्ध दर्शन का अध्ययन गहनता से कर सकते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय किस प्रकार हुआ ? इसकी मुख्य विशेषताएँ क्या थीं ? वर्णन कीजिए।

उत्तर—पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय मुक्तिदाता की कल्पना से हुआ था। हिन्दू धर्म में दो परंपराएँ शामिल थीं—वैष्णव तथा शैव। वैष्णव परंपरा में विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है, जबकि शैव संकल्पना में शिव परमेश्वर है। इन परंपराओं में एक विशेष देवता की पूजा को विशेष महत्व दिया जाता था। इस प्रकार की उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था इसे भक्ति कहते हैं।

अवतारवाद—वैष्णववाद में कई अवतारों के आस-पास पूजा पद्धतियाँ विकसित हुईं। इस परंपरा में दस अवतारों की कल्पना की गई है। यह माना जाता था कि पाप बढ़ जाने के कारण दुनिया में अव्यवस्था और विनाश की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय पर विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग-अलग रूपों अवतार लेते हैं। संभवत: अलग-अलग अवतार देश भिन्न-भिन्न भागों में लोकप्रिय थे। इन सभी स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मान लेने से ही वैष्णववाद एक एकीकृत धार्मिक परंपरा बन गई।

मूर्तियाँ—कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है। अन्य देवताओं की भी मूर्तियाँ बनाई गईं। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था। परंतु उन्हें कई मूर्तियों में मनुष्य के रूप में दर्शाया गया है। ये सभी चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे। उनके गुणों और प्रतीकों को उनके शिरोवस्त्रों, आभूषणों, आयुधों (हथियार और हाथ में धारण किए गए अन्य शुभ अस्त्र) और बैठने की शैली से व्यक्त किया जाता था।

पुराणों की कहानियाँ—इन मूर्तियों के अर्थ समझने के लिए इतिहासकारों को इनसे जुड़ी कहानियों से परिचित होना पड़ता है। कई कहानियाँ प्रथम सहस्राब्दी के मध्य से ब्राह्मणों द्वारा रचित पुराणों में मिलती हैं। इनमें अनेक किस्से ऐसे हैं जो सैकड़ों वर्षों तक सुने-सुनाए जाते रहे थे। इनमें देवी-देवताओं की कहानियाँ भी हैं। इन्हें सरल संस्कृत श्लोकों में लिखा गया था और इन्हें लोगों की ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाया जाता था।

पुराणों की बहुत सारी कहानियाँ लोगों के आपसी मेल से विकसित हुईं। पुजारी, व्यापारी और सामान्य स्त्री-पुरुष एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते हुए अपने विश्वासों तथा अवधारणाओं का आदान-प्रदान करते थे। उदाहरण-वासुदेव श्री कृष्ण मथुरा प्रदेश के प्रमुख देवता थे। परंतु कई शताब्दियों के दौरान उनकी पूजा देश के अन्य देशों में भी फैल गई।

प्रश्न 2. बौद्ध धर्म के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इनका भारतीय जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ न तो घोर तपस्या पर आधारित थी और न ही भोग या शिथिलता पर। इनकी प्रमुख शिक्षाओं का आधार चार मूल सिद्धांत था—

Scanned with CamScanner

(1) संसार दुःखों का घर है। (2) इच्छाएँ ही दुःखों का कारण बनती हैं। (3) इच्छाओं का दमन ही दुःखों के नाश का मूल-मंत्र है। (4) इच्छाओं का दमन अष्ट मार्ग द्वारा करना चाहिए। ये प्रमुख अष्ट मार्ग निम्न हैं—

(i) सम्यक् दृष्टि, (ii) सम्यक् संकल्प, (iii) सम्यक् वाक्, (iv) सम्यक् कर्म, (v) सम्यक् जीविका (vi) सम्यक् प्रयास, (vii) सम्यक् स्मृति, (viii) सम्यक् समाधि।

मध्यम मार्ग के सिद्धांत—मध्यम मार्ग के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

(1) अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, (2) कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास, (3) जात-पात और छुआछूत में अविश्वास, (4) ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मौन, (5) वेद को ईश्वरीय ज्ञान का स्रोत न मानना, (6) जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति अर्थात् मोक्ष, (7) यज्ञ और बलि पर विश्वास न था, (8) शुद्ध जीवन पर विशेष बल जिसमें मनसा, वाचा, कर्मणा, सत्य, अहिंसा पर बल दिया जाता था।

भारतीय जीवन पर प्रभाव—लोगों में सत्य, अहिंसा आदि नैतिक गुणों का विकास हुआ। समाज में ब्राह्मणों का प्रभाव कम हो गया। लोग व्यर्थ के आडम्बरों से दूर हो गये। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए देश-विदेश से विद्यार्थी आते थे। इसके चलते लोगों में अंतर्राष्ट्रीय मैत्री बढ़ी। बौद्ध धर्म के विदेशों में फैलने से वहाँ से सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध जुड़ गए। जातीय बंधन कमजोर पड़ गए।

समाज में निम्न वर्ग के लोगों के लिए बौद्ध धर्म के दरवाजे खुले थे। जो हिंदू कट्टरता से परेशान होकर धर्म-परिवर्तन की बात सोचते थे, उन्हें अपना पसंदीदा व मनचाहा धर्म मिल गया था। इस धर्म के प्रभाव के कारण लोग अंधविश्वास व जादू-टोना से दूर हो गए थे। इससे लोगों की मानसिकता में भी बदलाव आया।

प्रश्न 3. बौद्ध और जैन सम्प्रदायों के आंदोलनों को धार्मिक सुधार आन्दोलन क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—बौद्ध और जैन सम्प्रदायों के आन्दोलनों को धार्मिक सुधार आन्दोलन निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर कहा जाता है—

(1) इस काल का समाज चार वर्गों में बँटा हुआ था। ब्राह्मण, जिन्हें पुरोहित और शिक्षा का काम सौंपा गया था, समाज में सबसे ऊँचा होने का दावा करते थे। वे कई विशेषाधिकारों के अधिकारी थे, जैसे—दान लेना, करों से छुटकारा व दण्ड की माफी आदि। (2) जो जितने ऊँचे वर्ण का होता था, वह उतना ही सुविधाधारी और शुद्ध माना जाता था। अपराधी, जितना ही नीच वर्ग का होता था, उसके लिए सजा उतनी ही कठोर होती थी। (3) यह स्वाभाविक था कि वर्ण विभाजन वाले समाज के बीच तनाव हो, क्षत्रिय लोगों ने ब्राह्मणों को समाज में ऊँचा स्थान पाने पर आपत्ति की उन्होंने वर्ण व्यवस्था को जन्म मूलक मानने के विरुद्ध एक आंदोलन छेड़ दिया। जैन धर्म के संस्थापक वर्द्धमान महावीर और बुद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय वंश के थे। दोनों ने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी। (4) ब्राह्मण प्रधान समाज में वैश्यों का स्थान तीसरी कोटि में था। प्रथम और द्वितीय कोटि में क्रमशः ब्राह्मण और क्षत्रिय आते हैं। अतः वैश्य ऐसे किसी समाज की तलाश में थे, जहाँ उनकी स्थिति सुधरे। वैश्यों ने महावीर व गौतम बुद्ध दोनों की उदारतापूर्वक सहायता की। इसके मुख्य कारण थे—इन दोनों का वर्ण व्यवस्था में विश्वास न होना। अहिंसा का उपदेश दिया, जिससे युद्ध रुक गये और व्यापार में वृद्धि हुई। ब्राह्मणों ने धर्म सूत्र द्वारा सूद लेना वर्जित कर रखा था, अतः वैश्य उनके विरोधी हो गये। (5) बौद्ध धर्म और जैन धर्म, दोनों शुद्ध और नियमित जीवन के पक्षपाती थे। भिक्षुओं को सोना और चाँदी छूना वर्जित था। उन्हें अपने दाताओं से उतना ही लेना होता था, जितने से उनकी प्राण रक्षा हो सके। इसलिए उन्होंने गंगा घाटी के नये जीवन में विकसित भौतिक सुख-सुविधाओं का विरोध किया।

विभिन्न व्यक्तियों और निकायों की भूमिका—(1) जब बौद्ध धर्म श्रीलंका जैसे नये इलाकों में फैला तो दीपवंश (द्वीप का इतिहास) और महावंश (महान इतिहास) जैसे क्षेत्र-विशेष बौद्ध इतिहास को लिखा गया। इनमें से कई रचनाओं में बुद्ध की जीवनी लिखी गई है। ज्यादातर पुराने ग्रंथ पालि में है। बाद के युगों में संस्कृत में ग्रंथ लिखे गए।

(2) जब बौद्ध धर्म पूर्वी एशिया में फैला तो फा-शिएन और शिएन और श्वान त्सांग जैसे तीर्थयात्री बौद्ध ग्रंथों की खोज में चीन से भारत आये। ये पुस्तकें वे अपने देश ले गए जहाँ विद्वानों ने इनका अनुवाद किया।

(3) हिन्दुस्तान के बौद्ध शिक्षक भी दूर के देशों में गये। बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए वे अनेक पुस्तकें भी अपने साथ ले गए। कई सदियों तक ये पांडुलिपियाँ एशिया के भिन्न-भिन्न भागों में स्थित बौद्ध

Scanned with CamScanner

विहारों में संरक्षित थीं। पाली, संस्कृत, चीनी और तिब्बती भाषाओं में लिखे इन ग्रंथों से आधुनिक अनुवाद तैयार किए गए हैं।

प्रश्न 4. जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म में कौन-कौन सी समानताएँ थीं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म में निम्नलिखित समानताएँ थीं—

1. **हिन्दू धर्म की कुरीतियों का विरोध**—दोनों धर्मों का जन्म हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों का विरोध करने के लिए ही हुआ था। दोनों धर्म जाति-पाति, छुआछूत, ऊँच-नीच एवं मूर्ति-पूजा के विरोधी थे।

2. **दोनों क्षत्रिय राजकुमार**—दोनों धर्मों के प्रवर्तक, क्षत्रिय राजकुमार थे। दोनों ही जीवों के प्रति दयाभाव रखते थे। दोनों का जनसाधारण पर विशेष प्रभाव था।

3. **अहिंसा पर बल**—दोनों धर्म अहिंसा में विश्वास रखते थे और किसी भी जीव को कष्ट देना महापाप समझते थे।

4. **ईश्वर की सत्ता को न मानना**—बौद्ध और जैन धर्म दोनों ही ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते थे और वेदों को भी ईश्वर कृत नहीं मानते थे।

5. **यज्ञ व कर्मकांड के विरोधी**—जैन और बौद्ध दोनों ही धर्म यज्ञ, हवन आदि अनुष्ठानों अथवा आडंबरों से दूर थे और यज्ञ में बलि देने के कट्टर विरोधी थे।

6. **पवित्रता पर बल**—दोनों धर्म बाहरी व आन्तरिक पवित्रता के पक्षपाती थे।

7. **जातिवाद का विरोध**—दोनों धर्म जातिवाद के घोर विरोधी थे और अन्य धर्म वालों का अपने धर्म में आने के लिए स्वागत करते थे।

8. **मोक्ष का समान लक्ष्य**—दोनों धर्म जीव को मुक्ति दिलाने के लिए मोक्ष को आवश्यक मानते थे। वे पुनर्जन्म एवं आवागमन के चक्कर से मुक्ति चाहते थे।

प्रश्न 5. जैन धर्म की उत्पत्ति, शिक्षाओं तथा विस्तार का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर—जैनियों के मूल सिद्धांत छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वर्धमान महावीर के जन्म से पहले ही उत्तर भारत में प्रचलित थे। जैन परंपरा के अनुसार महावीर से पहले 23 शिक्षक हो चुके थे जिन्हें तीर्थंकर कहा जाता है। तीर्थंकर का अर्थ है—वे महापुरुष जो लोगों को जीवन की नदी के पार पहुँचाते हैं। महावीर ने अपने से पहले के तीर्थंकरों की शिक्षाओं को आगे बढ़ाया।

जैन धर्म की शिक्षाएँ—लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 10 देखिए।

जैन धर्म का विस्तार—जैन धर्म धीरे-धीरे भारत के अनेक भागों में फैल गया। बौद्धों की तरह ही जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत, तमिल आदि भाषाओं में काफी साहित्य का सृजन किया। सैकड़ों वर्षों से इन ग्रंथों की पांडुलिपियाँ मंदिरों से जुड़े पुस्तकालयों में संरक्षित हैं।

धार्मिक परंपराओं से जुड़ी सबसे प्राचीन मूर्तियों में जैन तीर्थंकरों के उपासकों द्वारा बनवाई गई मूर्तियाँ भारतीय उपमहाद्वीप के अनेक भागों में पाई गई हैं। यह बात जैन धर्म के व्यापक विस्तार को दर्शाती है।

प्रश्न 6. साँची की मूर्तिकला को समझने में बौद्ध साहित्य के ज्ञान से कहाँ तक सहायता मिलती है ? **(NCERT)**

उत्तर—साँची स्तूप भोपाल राज्य में स्थित एक अद्भुत प्राचीन अवशेष है। इस स्तूप समूह में अर्द्धगोले के आकार का एक विशाल ढाँचा तथा कई दूसरी इमारतें शामिल हैं।

संरचनात्मक विशेषताएँ—साँची का प्रारंभिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं। इसमें केवल पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी। उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं ओर रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे। ऐसा लगता था मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुसरण कर रहे हों। बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

लोक परंपराएँ व रीति रिवाज—साँची की बहुत सी मूर्तियों में सुंदर स्त्रियों की मूर्तियाँ शामिल हैं। इनका संबंध बौद्ध मत से नहीं था। इन स्त्रियों को तोरणद्वार के किनारे एक पेड़ पकड़कर झूलते हुए प्रदर्शित किया गया है। साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से विद्वानों को यह आभास हुआ कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है। लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छूए जाने से वृक्षों में फूल खिल जाते थे और

Scanned with CamScanner

फल आने लगते थे। संभवत: इसे एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इसी कारण स्तूप के अलंकरण में इसका प्रयोग किया गया। शालभंजिका की मूर्ति से पता चलता है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने अपने बुद्ध-पूर्व तथा बौद्ध धर्म से अलग अन्य प्रथाओं, विश्वासों तथा धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया। साँची की मूर्तियों के अनेक प्रतीक अथवा चिह्न इन्हीं परंपराओं से चुने थे। उदाहरण—यहाँ जानवरों के कुछ बहुत सुंदर उत्कीर्णन मूर्तियों में पाए गए हैं। इन जानवरों में हाथी, घोड़े, गाय-बैल और बंदर शामिल हैं।

इसके अलावा दूसरी मूर्ति में कमल दल और हाथियों के मध्य एक महिला को दर्शाया गया है जिसमें हाथी उनके ऊपर जल डाल रहे हैं जैसे वे उनका अभिषेक कर रहे हों। कुछ इतिहासकार इस महिला को बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं तो कुछ अन्य इतिहासकार उन्हें एक लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी मानते हैं। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली देवी थी जिन्हें प्राय: हाथियों से जोड़ा जाता था।

कई स्तंभों पर सर्पों को चित्रित किया गया है। यह प्रतीक भी ऐसी लोकपरंपराओं से लिया गया प्रतीत होता है जिनका ग्रंथों में बहुत कम उल्लेख होता था। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि कला के विषय में लिखने वाले एक आधुनिक इतिहासकार जेम्स फर्गुसन ने साँची को वृक्ष और सर्प-पूजा का केन्द्र माना था। वास्तव में वह बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे क्योंकि तब तक अधिकांश बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ था।

मूर्तिकला की विशेषताएँ—कला इतिहासकारों को साँची की मूर्तिकला को जानने बुद्ध के चरित-लेखन का सहारा लेना पड़ा। बौद्ध-चरित-लेखन के अनुसार बुद्ध को एक वृक्ष के नीचे चिंतन करते हुए ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। कई प्रारंभिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में प्रदर्शित न कर उनकी उपस्थिति प्रतीकों के द्वारा दर्शाने का प्रयास किया। उदाहरण—स्तूप महापरिनिब्बान का प्रतीक और रिक्त स्थान बुद्ध के ध्यान की दशा बन गए। चक्र का भी प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया। यह बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश का प्रतीक था। वास्तव में ऐसी मूर्तिकला को अक्षरश: समझ पाना बहुत कठिन है। ऐसे प्रतीकों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इतिहासकार इन कलाकृतियों के निर्माताओं की परंपराओं को समझें।

प्रश्न 7. वैष्णववाद और शैववाद के उदय से जुड़ी वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास की चर्चा कीजिए। **(NCERT)**

उत्तर—600 ई.पू. से 600 ई. तक के काल में वैष्णववाद और शैववाद का भी पर्याप्त विस्तार हुआ। वैष्णववाद और शैववाद इन दोनों परंपराओं में एक देवता विशेष की पूजा पर विशेष जोर दिया जाता था। वैष्णव संप्रदाय में विष्णु को और शैव परंपरा में शिव परंपरा में शिव को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता माना जाता है। दोनों संप्रदाएँ पौराणिक हिन्दू धर्म से संबंधित थीं और दोनों के अंतर्गत मूर्तिकला का विकास विशेष रूप से हुआ।

मूर्तिकला—अवतारवाद की भावना वैष्णव धर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। इसमें विष्णु के अवतारों की पूजा पर बल दिया गया। विष्णु के अनेक अवतारों की मूर्तियाँ बनाई गईं। इनके अलावा कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है। अन्य देवताओं की भी मूर्तियाँ बनाई गईं। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था परंतु उन्हें कई मूर्तियों में मनुष्य के रूप में भी दर्शाया गया है। ये सभी चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे। उनके गुणों और प्रतीकों को उनके शिरोवस्त्रों, आभूषणों, आयुधों (हथियार और हाथ में धारण किए गए अन्य शुभ अस्त्र) और बैठने की शैली से व्यक्त किया जाता था।

वास्तुकला—जिस समय साँची जैसे स्थानों पर स्तूप अपने विकसित रूप में आ गए थे उसी समय देवी-देवताओं की मूर्तियों को देखने के लिए सबसे पहले मंदिर भी बनाए गए। आरंभिक मंदिर एक चौकोर कमरे के रूप में बनाए जाते थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था। इनमें एक दरवाजा होता था जिसमें से उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए अंदर जाता था। इसके बाद धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ऊँचा ढाँचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था। मंदिर की दीवारों पर प्राय: भित्ति चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे। समय बीतने के साथ मंदिरों के स्थापत्य में अनेक नई कलाएँ देखने को मिलीं। मंदिरों के साथ विशाल सभास्थल, ऊँची दीवारें तथा तोरण भी बनाए जाने लगे। जल आपूर्ति की व्यवस्था भी की जाने लगी। प्रारंभ में मंदिर पहाड़ियों को काटकर उन्हें खोखला करके कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाए गए थे। कृत्रिम गुफाएँ बनाने की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही थी। सबसे प्राचीन कृत्रिम गुफाएँ ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में अशोक के आदेश पर आजीविकों के लिए बनाई गई थीं।

Scanned with CamScanner